सिँघासण

(निहकलंक हरि शब्द भंडार चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

०१) सच सिँघासण गुरमुख आत्म गृह, दूजा नज़र कोई ना आईआ । जिस घर स्वामी ठाकर हो के बहे, निरगुण जोती जाता डगमगाईआ । जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना होवे लै, मरन जन्म विच्च गेड़ ना कोई भवाईआ। आपणा भाणा आपे सहे, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ। शब्दी हुक्म गुरमुखां सच कहे, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द आप सुणाईआ। धन्न सुभाग जिस काया मन्दर अंदर जगया चिराग पुरख अकाला दीन दयाला तिस दवारे वसे गृह, घट भीतर सोभा पाईआ। जिस दा भेव जाणे ना कोई शक्ती दवै, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच घराना श्री भगवाना इक्को इक्क सुहाईआ।

सच घराना गुरमुख घर, काया माटी साढ्ढे तिन्न हत्थ सोभा पाईआ। जिथ्थे वसे नरायण नर, नारी पुरख रूप नज़र कोई ना आईआ। दयाल हो के किरपाल हो के सुरती लए फड़, शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। साचे मन्दर स्वामी अन्तरजामी हो के जाए चढ़, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। अमृत वखाए आत्म परमात्म साचा सर, झिरना अगम्मी आप झिराईआ। निरगुण निरगुण लए वर, सरगुण वज्जे तत्त वधाईआ। सच दवार एकँकार निरगुण धार आपे खड़, पर्दा उहला दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी

नित नवित्त भगत भगवान खेल रिहा कर, करनी दा करता कुदरत दा मालक प्रितपालक ख़ालक आलस निंदरा विच्चों सन्त सुहेला बाहर कढ़ाईआ। (२०—१२०)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

०२) वेखे सुणे परखे वेखे परखे। बिन नाड़ी एह पिंजर खड़के। आपणा सहिंसा सारे लाहो। पूरन सिँघ दी नबज़ नूं हत्थ है लाउ। ऐसी एह चली चाल। नबज़ ना चले आपणी चाल। भेत ना आपणा गुरू रखाया। प्रगट हो के दर्शन दिखाया। सच्चा तख्त गुर सचे बणाया। सिँघासण प्रभ नाम रखाया। (०१ २१)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

०३) संगत साची जाणीए, आत्म अन्तर रंग। संगत साची जाणीए, घर वेखे सेज पलँघ। संगत साची जाणीए, घर सुणे नाद मरदंग। संगत साची जाणीए, आपणा दवारा आपे जाए लँघ। संगत साची जाणीए, अठ्ठे पहर रहे परमानंद। संगत साची जाणीए, जिस सतिगुर सुणाए सुहागी छन्द। संगत साची जाणीए, जिस अन्त ना आए कंड। संगत साची जाणीए, जो वसे उपर ब्रह्मण्ड । संगत साची जाणीए, जित आत्म होए ना रंड। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद वसे संगत संग। (१०-८२५)

★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★

०४) साचा मन्दर उच्च अट्टला, राम रामा वंड वंडाईआ। आदि जुगादी बैठा इक्क इकल्ला, सच सिँघासण आसण पाईआ। शब्द संदेस जन भगतां आपे घल्ला, आपणा नाउँ दए प्रगटाईआ। पंज तत्त काया चोले रला, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। सृष्ट सबाई भुलाए कर कर वल छला, भेव अभेद ना कोई खुल्ह़ाईआ। गुरमुखां सच सिँघसण मल्ला, आत्म सेजा सोभा पाईआ। दीपक जोती एका बला, जोत निरञ्जण करे रुशनाईआ। दर दरवेश आपे खला, दर दरबान रूप वटाईआ । जिस जन फड़ाया आपणा नाम पल्ला, दो जहान विछड़ कदे ना जाईआ । कलिजुग जीव अन्तम होया झल्ला, विसरया एका हरि रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे साचा वर, एका वर नाम रखाईआ। (१६ जेठ २०१८ बि भाग सिँघ)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

०५) हत्थ कहण एह नात जुड़या पंजी, प्रकृतीआं देण दुहाईआ । पुरख अकाल दीन दयाल भगतां दी आत्म सेज सुहौणी धुर दी मंजी, सिँघासण इक्को इक्क वड्डयाईआ। जिथ्थे ना कोई रोग सोग चिन्ता ग़म रंजी, रंजस अंदरों देणी कढ्ढाईआ। दीन मज़हब दी रहे ना कोई पाबन्दी, शरअ विच्च बंधन ना कोई रखवाईआ। गुरमुखां निझ नेत्र अक्ख मूल रहे ना अन्धी, अज्ञान अन्धेरा देणा मिटाईआ। गोबिन्द दी लिखत पुरख अकाल दी संधी, संध्धया तों देणा बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। (२१—१५)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

०६) माघ कहे मैं भगतां दस्सणा सच, सहज सहज जणाईआ। गुरमुखो पड़दा लाह के वेखो काया माटी कच्च, कचन गढ़ सुहाईआ। तुहाढ्ढे अन्तर बैठा पुरख समरथ, घर विच्च आपणा डेरा लाईआ। जिस दा नक्क मूंह नहीं हत्थ, तत्तव तत्त ना कोई प्रगटाईआ। हकीकत विच्च सच, सति दए समझाईआ। साढ्ढे तिन्न करोड़ अंदर रिहा रच, रचना आपणी दए जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। (१६ ११२)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

०७) गुर संगत साचा फुल्ल गिआ फुल। प्रभ आप चुकाए अगला पिछला मूल, भाग लगाए साची कुल। एका ओट रखवाए कन्त कन्तूहल, पूरे तोल गई तुल। सोहँ शब्द पंघूड़ा रिहा झूल, सच दवारा गिआ खुल्ल। सच सिँघासण हरि बिराजे ना कोई पावा ना कोई चूल, लोकमात ना लाए कोई मुल्ल। जोती जोत सरूप हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि संगत लेखा आप लिखाया, भरम भुलेखा दूर कराया, हरिजन लोकमात ना जाए रुल। (१ चेत २०१२ बिक्रमी)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

०८) भगत सेजा आत्म पलँघ, जुग जुग ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ मिले सूरा सर्बंग, शाह पातशाह फेरा पाईआ। आत्म परमात्म देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों दरसाईआ। गीत सुहागी सुणाए छन्द, अनबोलत राग अलाईआ। निर्मल जोत चाढ़े चन्द, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। अनहद वजाए नद, धुन आत्मक नाम जणाईआ। कूड़ी क्रिया करे पार हद्द, सच दवारा इक्क दरसाईआ । माया ममता खैहड़ा जाए छड्ड, हउमे हंगता रहण ना पाईआ। निरगुण सरगुण पड़दा देवे कज्ज, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। अमृत

जाम प्याए मध, रस इक्को इक्क वरवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान होए आप सहाईआ। (१३ ७७५)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

०६) भगत भगवान इक्को सेज, आत्म परमात्म सोभा पाईआ। जिथ्थे देवे जोती तेज, नूर जोत रुशनाईआ। शब्द संदेशा देवे भेज, अगम्म नाद सुणाईआ। उथ्थे एह दो अक्खां ना सकण वेख, जिथ्थे बैठा आपणा रसीआ रस चखाईआ। पुज ना सकण चार वेद, पुरान पर्दा ना कोई खुल्लाईआ। की होया जे दुनियां वाले दुनियां रहे वेख, दुनियां दी ममता विच्च दुनियां दी महिंमा विच्च आपणा आप गवाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जिस ने आपणी करनी अज्ज तक्क नहीं दित्ती किसे अग्गे बेच, वणजारा नज़र कोई ना आईआ। जद आया ते रक्ख के आपणी सेध, निशाने आपणे गिआ चलाईआ। पुरख अकाल सच्चा सतिगुरू नहीं कोई बक्करी भेड, वाड़े विच्च फड़ के जिथ्थे कोई चाहे ओथ्थे बन्द कराईआ। एह ओस प्रभू दी खेड, जो जुग जुग आपणे हत्थ रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद वसे आपणे अगम्मे देस, दिशा लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त सभ दी वेख वखाईआ। (५ कत्तक सै सं ५ वरकशॉप विच)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

१०) शब्द किहा मैं शब्दी काफ़र, गहर गम्भीर अखवाईआ। जुग चौकड़ी रिहा होर, कलिजुग होर रूप बदलाईआ। जद वेखो नवां नकोर, बिरध बाल ना रूप जणाईआ। मेरा किसे दे नाल नहीं कोई खोर, भगतां दा खोजी बण के फेरा पाईआ। गुरमुखो कोई प्रभू तुहाड्ढे वरगा नहीं कठोर, जो दर आया नूं देवे दुरकाईआ। जे सच समझो तुहाड्ढे अंदर वसां तुसां फेर वी नहीं जाणी लोड़, लोड़ां जगत पूर कराईआ। जदों वड़ां ते वड़ां बण के चोर, राती सुत्यां दे अंदर डाका आवां पाईआ। तुहाड्ढा ख़जाना तुसीं नहीं समझे ते ना कोई जाणे लक्ख करोड़, असंखवां वाली गणत ना कोई गणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। (१६—६७)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

११) धुर दा हुक्म कहे जो रिहा दस्सदा, दह दिशा हुक्म सुणाईआ । जिस दवारे रिहा वसदा, सचखण्ड सोभा पाईआ। जिस प्रेमी नाल रिहा हस्सदा, प्रीतम तक्कया बेपरवाहीआ। जिस दा खेल वेख्या जुग चौकड़ी रथ दा, रथवाही हो के सेव कमाईआ। सो वेस वटाए

दया कमाए रूप प्रगटाए पुरख समरथ दा, समां समें विच्चों बदलाईआ। जो भगत सुहेले सद्दा, सन्तन रंग रंगाईआ। झगड़ा मुका के शाहरग दा, शहनशाह आपणा घर दए समझाईआ। जिथ्थे इक्को दीपक जगदा, दिवस रैण होए रुशनाईआ। झगड़ा मुक जाए काअबे वाले हज्ज दा, शिवदवाला मन्दर मठ सीस ना कोई झुकाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशण इक्को सजदा, सजदयां दा लेखा दए मुकाईआ। नूर नुराना हो के दगदा, दगेबाजी दए गवाईआ। जो सभ नूं घट घट भीतर हो के तक्कदा, बिनां अक्खां अक्ख खुल्ह़ाईआ। उह खेल करे जग सच दा, साचे दी साची सच वड्डयाईआ। सचखण्ड दवारा कहे मैं ओसे पुरख अकाल नाल वसदा, जो मेरे अंदर सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चरन दवारे सद्दा, हुक्मी हुक्म मनाईआ। कोई लेख ना जाणे अज्ज दा, कलकाती कर्म कांड ना कोई कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फ़रमाण आपणा रिहा सुणाईआ। (२४ माघ शै सं १) (१६-१८६)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

१२) माघ कहे मैं भगतां दस्सणा सच, सहज सहज जणाईआ। गुरमुखो पड़दा लाह के वेखो काया माटी कच्च, कचन गढ़ सुहाईआ। तुहाढ़े अन्तर बैठा पुरख समरथ घर विच्च आपणा डेरा लाईआ। जिस दा नक्क मूंह नहीं हत्थ, तत्तव तत्त ना कोई प्रगटाईआ। हकीकत विच्च सच, सति दए समझाईआ। साढ़े तिन्न करोड़ अंदर रिहा रच, रचना आपणी दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। (१६—११२)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

१३) माघ कहे मैं वेख्या भगतां अंदर रंग, ललारी नज़र कोई ना आईआ। सुणया अगम्मी छन्द, तूं मेरा मैं तेरा इक्को ढोला रहे गाईआ। वेख्या अनोखा पलँघ, जिस दा पावा चूल बाडी वंड्ड ना कोई वंड्डाईआ। आत्म परमात्म बिन अक्खां तक्कया संग, सगला संग निभाईआ। बिन सूरज चन्द चाढ़ के चन्द, निरगुण जोत करे रुशनाईआ । हरख़ सोग मेट के ग़म, खुशी खुशी विच्चों बदलाईआ। नाता तोड़ के हड्ड मास नाड़ी चंम, चम्म दृष्टी दए गवाईआ। खेल करे श्री भगवन, भगत सुहेले लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दर वेख वखाईआ। (१६—१४५)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

१४) गुर अवतार पैगम्बर कहण तेरे सिँघासण दी केहड़ी चूल, प्रभ सहजे दे समझाईआ। किथ्थे बहें कन्त कन्तूहल, कन्त धुरदरगाहीआ। पुरख अकाल कहे मेरे रहण दा मेरे बहण

दा भगतां दे अंदर मूल, जिथ्थे वेखण कोई ना जाईआ। ओथ्थे वड़ां ओथ्थे चढ़ां जिथ्थे मैनूं कोई ना जाए भूल, भुल्लयां नूं आपणे नाल रलाईआ। आदि जुगादि भगत उधारना बणया इक्क असूल, असल नाल वसल यार कराईआ। हुक्म इक्क माअकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मैं कदे ना जावां भूल, भुल्लयां आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा बिन लेख ना किसे वखाईआ। (२०-२७५)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

१५) हत्थ कहण एह नात जुड़या पंजी, प्रकृतीआं देण दुहाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल भगतां दी आत्म सेज सुहौणी धुर दी मंजी, सिँघासण इक्को इक्क वड्डयाईआ। जिथ्थे ना कोई रोग सोग चिन्ता ग़म रंजी, रंजस अंदरों देणी कढ्ढाईआ। दीन मज़हब दी रहे ना कोई पाबन्दी, शरअ विच्च बंधन ना कोई रखवाईआ। गुरमुखां निझ नेत्र अक्ख मूल रहे ना अन्धी, अज्ञान अन्धेरा देणा मिटाईआ। गोबिन्द दी लिखत पुरख अकाल दी संधी, संध्धया तों देणा बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। (२१ ०१५)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

१६) एह पुराणे कपड़े दी जेब, जिस नूं ज़ेबकुतरा ना कोई चुराईआ । जिस वेले भीलनी नाल राम कीता फरेब, चरन धो के खुशी बणाईआ। ओस ने किहा बेर, राम ना किहा सेब, मुख नाल मुफ्त सलाहीआ। भीलणी किहा कुछ लिख दे उत्ते कतेब, अक्खरां नाल वड्डयाईआ। राम किहा भीलनी भगत भगवान दी खेल जाणदे नहीं चार वेद, शास्त्रां विच्चों हत्थ किसे ना आईआ। एह लभ्भदा नहीं भेव, भाण्डा भरम ना कोई भन्नाईआ। जिस दा निशाना इक्को सेध, मंज़ल धुरदरगाहीआ। उह आपे खेले आपणी खेड, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। कलिजुग अन्त जिस वेले भगतां दे पकवान दी बणौण देग, रिध्धा पक्का आप सहाईआ। ओसे वेले गरीब निमाणयां दी आपणे नाम नाल भर देवे जेब, खाली रहण कोई ना पाईआ। सच भंडारा धुर दरगाहों देवे भेज, भंजन बन्दगी दा झगड़ा देवे चुकाईआ। कमलीए अंदर वड़ के देवे जोती तेज, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सदा आत्मा माणे सेज, सच सिँघासण सोभा पाईआ। भीलणीएं एह पुराणी इस कर के रक्खी शाइद कोई गुरसिख भुल्ल के एहनूं ना आवे वेच, लालच टकयां वाला रखवाईआ। क्यों कलिजुग ने अमीरां गरीबां नूं धोखे फरेब दी पा दित्ती गेझ, शाह कंगाल बच्या नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा सभ दा रिहा मुकाईआ। (२१-०२२)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

१७) कलिजुग कूड़ी क्रिया कीता अन्ध, निज नेत्र लोचण नैण ना कोई रुशनाईआ। मन वासना मुक्के किसे ना पन्ध, दीन दुनी भज्जे वाहो दाहीआ। आत्म सेजा सुहाए ना कोई पलँघ, सच सिँघासण बैठ खुशी ना कोई मनाईआ। धुन अनादी सुणे ना कोई मरदंग, शब्द अगम्मी आवाज़ ना कोई जणाईआ। जोती नूर चमके कोई ना चन्द, भेव अभेद ना कोई खुल्लाईआ। सच समावे ना कोई परमानंद, निजानंद ना कोई रसाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द गा गा थक्के छन्द, ढोले रागाँ नादां विच्च अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर पड़दा दे उठाईआ। (२०-१६६)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

१८) जिस वेले सदी सदीवी गई लँघ, कलिजुग अन्तम वेला आईआ। दीन दुनी होई नंग, सिर हत्थ ना कोई टिकाईआ। नाम झगड़ा पए विच्च वरभंड, वरभंडी कूड़ लोकाईआ। मन कल्पणा वधे गंद, रसना जिह्वा हलकाईआ। साचा गावे कोई ना छन्द, सहिँसा कूड़ ना कोई मिटाईआ। आत्म मिले ना परमानंद, निज़ानंद ना कोई समाईआ। निरगुण जोत चढ़े ना चन्द, घर विच्च घर ना कोई रुशनाईआ। झगड़ा मिटे ना जगत खण्ड, नव नौं चार ना डेरा ढाईआ। पैंडा मुक्के ना जेरज अंड, उत्भुज सेतज लेखा ना कोई मुकाईआ। नेत्र रोवे गोदावरी गंग, जमना सुरसती दए दुहाईआ। मन्दर मस्जिद शिवदुआले मद्ध होवण रंड, गुरूदवार हाहाकार सुणाईआ। सच दवार जाए कोई ना लँघ, मंज़ल हक़ ना कोई वखाईआ। गोबिन्द किहा पुरख अकाल दीन दयाल ओस वेले मैं मंगाँ एहो मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। सवा गज़ दी तेरी धार जन भगतां दी आत्म सेज विछा पलँघ, जगत सिँघासण दी लोड़ रहे ना राईआ। उह सदा गावण तूं मेरा मैं तेरा छन्द, खुशी होवे बन्द बन्द, बन्दगी इक्को इक्क दृढ़ाईआ। तेरे नाल जावां हंढु, झगडा छड्ड खण्ड ब्रह्मण्ड, सचखण्ड दवार जावां लँघ, जिथ्थे तेरा नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। (२१-५५)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

१६) बाले किहा किस तरां तिन्न जुग जाण लँघ, कवण याद कराईआ। बावन किहा मेरे रूप दा खेल होणा वरभंड, ब्रह्मण्ड हुक्म चलाईआ। उहदा जोती जामा ते शब्दी धार खेल सवेर संझ, हिस्सा वंड ना कोई वंडाईआ। पिछला लेखा याद कराउणा त्रेते दी धार वाला पैहलों आपणा चुकाउणा पलँघ, जिस नूं दो सत्त दी वंड नाल वंडाईआ। फेर अगली मंज़ल जाणी लँघ, पुरी घनक करे सफाईआ। फेर खेल सूरा सर्बंग, आपणा पड़दा आप उठाईआ। कलिजुग अन्तम करके नंग, आपणा घर बार सारा दए लुटाईआ। निशान वेखे तारा चन्द, चन्द सितार खोज खुजाईआ। झट्ट बाले मंगी मंग, चरनी ढह के सीस निवाईआ।

बखशिश कर सूरे सरबंग, तेरे हत्थ वडयाईआ। बावन हस्स के किहा एह सारा समां वेहदिआं जाए लँघ, अन्तम अन्त खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ।

तीजी धार खेल अपारा, हरि करता आप कराईआ। बिनां भगत दवार तों प्रभ दा सिँघासण रहे ना विच्च संसारा, गृह गृह अलक्ख ना कोई जगाईआ। एहो खेल सची सरकारा, हरि करता आप कराईआ। जिस कारन तीजी धार कलसीआं पाया उजाड़ा, जगत निशान निशाने वाला गवाईआ। अग्गे खेल करे निरँकारा, हरि करता बेपरवाहीआ। जन भगतां दा खाली भरे भंडारा, भुक्खयां भुक्ख दए गवाईआ। सृष्टी दे लंगर दा इक्क बणे वरतारा, दूजा नज़र कोई ना आईआ। कलसीआं वालयां दे सहारा, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। रिषीआं दा उधारा, लेखा सभ दी झोली पाईआ। जिस दा बल कीता इशारा, नन्हे बाले दित्ता दृढ़ाईआ। जिस वेले आया कल कलकी अवतारा, चौबीसा आपणा हुक्म वरताईआ। तेरा रूप होणा पुरख तों नारा, नारी नर नरायण परनाईआ। जोगिंदर कौर रूप धरया सुत बल दवारा, धर्म दी धार वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। (२६ पोह शै सं ७ दिने ढाई वजे)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

२०) श्री भगवान कहे मैं भगतां चाढ़ां नाम रंग, अनडिठड़ा आप चढ़ाईआ। नाम सेजा सच पलँघ, सिँघासण आसण इक्क वडयाईआ। शब्द अगम्मी गा के छन्द, बिन अक्खरां करां पढ़ाईआ। नाम निधान वजा मरदंग, सोई सुरती लवां उठाईआ। दूई द्वैती भरमां ढाह के कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। भेव खुल्ह के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म विच्च समाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को दस्सां सति धरम, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। लेखे ला के मानस जन्म, जरम आपणी झोली पाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां नाल जो करदा रिहा परन, कोल इकरार जुग जुग आप जणाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां बख्शे आपणी सरन, सरनगत इक्को नज़री आईआ। नेत्र खोल्हे हरन फरन, निझ लोचण करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले मेल मिलाईआ। (१६ २३६)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

२१) जन भगत कहे मैं प्रभ दा पढ़ना मज़मून, कुतबखानयां विच्चों किताब ना कोई वखाईआ। जिस दा दो जहानां तों वक्खरा कानूंन, जुग चौकड़ी धार ना कोई बदलाईआ। जिस दा जलवा जलाल तों वक्खरा जनूंन, ज़ावीए विच्च सके ना कोई समझाईआ। ओस कलिजुग

अन्त कूड़ी क्रिया जगत विकार मन मत बुद्ध कर फ़ज़ूल, फ़ैसला हक़ देणा सुणाईआ। दो जहानां हुक्म करना पए कबूल, सिर सके ना कोई उठाईआ। सति धर्म दा मार्ग दस्सणा असूल, असलीअत इक्क समझाईआ। प्रभ दे नाम दा अग्गे लए ना कोई मसूल, दीन मज़्हब ज़ात पात चुंगीखाने देणे मिटाईआ। जन भगतां सिधी बख्शे चरन कँवल सची धूल, चरन धूढ़ी टिक्का मस्तक आप रमाईआ। सच सिँघासण आत्म सेजा सुहाए जिस दी ना पावा ना कोई चूल, बिन तेल बाती दीपक जोत होवे रुशनाईआ। जिस गृह हुक्म संदेशा देंदा रहे माअकूल, मुकम्मल आपणा नाम जणाईआ। ओथे झगढ़ा मुका के कातल मकतूल, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सो धाम मुकाम किआम जन भगतां होणा वसूल, सति सच मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण रूप सदा अभूल, भुल्लयां रसते दए लगाईआ।(१६-२७५)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

२२) जन भगतां अंदर सिँघासण मल के, बैठा डेरा लाईआ। आत्म परमात्म रल के, सोहणा वक्त सुहाईआ। लोकमात पैहलों घल्ल के, फेर नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। लक्ख चुरासी सृष्टी दृष्टी छल के, अचरज खेल रिहा वखाईआ। सुहा के दवार दवारे वाले बल दे, बावन दा बावन फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, झगड़े मुका देवे गुरमुखां दे मन दे, ममता विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। (१६ ३०४)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

२३) जन भगतां प्रभ करे सदा वंड, वरभंड वेख वखाईआ। कूड़ी क्रिया देवे दंड, डण्डावत बन्दना इक्क समझाईआ। सच प्रेम दा देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्द, सहिँसा पिछला दए चुकाईआ। जो सच दुआरा एकँकारा आए लँघ, बण के पान्धी राहीआ। ओस दी सेज सुहञ्जणी होवे आत्म पलँघ, पावा चूल नज़र कोई ना आईआ। जिस सिँघासण सच बिराजे पुरख अबिनाशी धुर दा अनन्द, अनक कलधारी आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित्त नवित्त दीन दयाल सदा बख्शंद, बख्शिश रहमत रहमत बख्शिश इक्को घर वरताईआ। (२१ १२३)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

२४) सतिगुर शब्द कहे मेरे कहण दा अनोखा ढंग, जगत विद्या ना कोई चतुराईआ। जन भगतां पूरी करां मंग, तृष्ना तृखा पूर कराईआ। काया मन्दर अंदर लँघ, साढ़े तिन्न हत्थ वेखां चाईं चाईंआ। शब्द अनादि वजा मरदंग, सोई सुरत सुरत उठाईआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, सिँघासण इक्को इक्क समझाईआ। मैं रसना जिह्वा दे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। प्रकाश करके बिनां सूर्या चन्द, जोती जाता हो के डगमगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्द, आत्म परमात्म मेला मेलणा सहज सुभाईआ। सचखण्ड दवार इक्को वस्त देवां वंड, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। इक्को बोल विच्च सदा सदा सदा पए ठंढ, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ। (२४ २७४)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

२५) सतिजुग कहे मेरा पुरख अकाला एक, धुर दा राम बेपरवाहीआ । जिस काहन दी रक्खी टेक, उह मेरा काहन नूर अलाहीआ। जो सृष्टी दृष्टी अन्तर कर्म करे बिबेक, बुद्धि बोध ज्ञान नाल वडयाईआ। सति सच दी बखशे टेक, टिक्के धूढ़ी मस्तक खाक रमाईआ। अन्तर निरंतर खोले भेत, भेव अभेदा दए जणाईआ। दरस दिखाए नेतन नेत, निझ नेत्र लोचन नैण कर रुशनाईआ। साची रुत्त सुहञ्जणी करे बसन्ती चेत, चेतन्न सुरती आप कराईआ। पंच विकारा करे खेत, खण्डा खड़ग नाम उठाईआ। मानव जाती मनुख्ता दा होवे खेवट खेट, मानुख आपणे रंग रंगाईआ। जिस दे आत्म धार बेटी बेट, नी मर्द वंड वंडाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी जन भगतां आत्म सेज रिहा लेट, सच सिँघासण इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा आप समझाईआ। (२३ ११७४)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

२६) सतिगुर शब्द कहे ऐवें ना करयो हूं हूं, होके नाल सुणाईआ । जिनां चिर मैं विच्च ना मिले तूं तूं, मैं तूं विच्च समाईआ। तुहाढ़ा खुशी ना होवे लूं लूं, घर वज्जे ना सच वधाईआ। ओनां चिर प्रभ दे दवारे दी कदे ना भुल्लयो जूह, अग्गे पिच्छे कदम ना कोई टिकाईआ। जे मथ्थे टेकणे ते कोटन कोट बाहर वेखयो गुरू, घर घर बैठे डेरे लाईआ। जे आत्म हो के परमात्म नाल जाओ छूह, फिर शर्म हया रहे ना राईआ। आपणे घर दी तुहानूं आपे दस्स दए सूह, इशारे नाल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणी कार कमाईआ। (१६ ६५)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

२७) लहणा देण लग्गा गोबिन्द दी कुरबानी, करबले वाले परे हटाईआ। सति दवारे खवाउण लग्गा महमानी, नाम भंडारा इक्क वरताईआ। चार जुग दा झगड़ा मेटण लग्गा दीवानी, फैसला हक़ देवे सुणाईआ। जन भगतां दी आत्म रहे ना कोई बेगानी, बेवा रूप ना कोई वखाईआ। लहणा देणा चुकावे सुत भानी, अरजन अर्ज़ इक्क सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल ठाकर मेरे स्वामी, समां देणा बदलाईआ। गुरमुखां दी झोली पाउणी नेकनामी, निक्कयां तों वड्डे देणे बणाईआ। बेशक तेरी सृष्टी सदा फ़ानी, लासानी तेरी मेहर नज़री आईआ। साच्चयां भगतां दी लेखे लाउणी लोकमात जवानी, जमां तों लैणा छुडाईआ। नाता जोड़ के सांझा बाहमी, इतमीनान देणा कराईआ। तेरा भगत प्रभू किसे दी कट्टे ना कदे गुलामी, दूसर सीस ना कोई झुकाईआ। तूं पुरख अकाल धुर दा अनामी, अनाम एहनां दी झोली देणा पाईआ। बिना गुरसिखां सतिगुर दी सारे करदे बदनामी, जो पढ़ के सुण के रस्ता जाण भुलाईआ। उह गुरमुख नहीं गुरू घर दे हरामी, नादी सुत ना कोई अखवाईआ। भावें पंडत होवे भावें होवे ज्ञानी, इशनानी सार कोई ना आईआ। भावें धोती बन्ने तहमत भावें पावे पजामी, पैंट हैट कम्म किसे ना आईआ। तूं मालक खालक सभ दा अन्तरजामी, लक्ख चुरासी वेखें चाईं चाईंआ। कलिजुग अन्त अन्धेरी शामी, शमशान भूमी दिसे लोकाईआ। तूं प्रभू भगतां नूं मिलें नाल असानी, मिल के ऐहसान ना कोई चढ़ाईआ। क्यों एहनां गोबिन्द पिच्छे दित्ती कुरबानी, आप आपा वार वखाईआ। सेवा करी महानी, सीस जगदीश भेट कराईआ। झूजे विच्च मैदानी, मुद्दा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा वखाईआ। (१६ १२६)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

२८) हरि बाढी छन्न छुहंदड़ा, चार दीवार ना कोई रखाईआ। आपणी सेवा आप कमंदड़ा, आदि जुगादि वड्डी वडयाईआ। साचा रंग इक्क रगंदड़ा, रंग रंगीला मोहण माधव साचा माहीआ। सति दरवाजा इक्क खुलंदड़ा, आप आपणा दर समझाईआ। दीपक जोत इक्क जगंदड़ा, जोती नूर नूर रुशनाईआ। साचा धाम आप सुहंदड़ा, सोभावन्त बेपरवाहीआ। साचा खेल आप खुलंदड़ा, एकँकारा दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर एका एक बुझाईआ ।

साचा बाढी हरि पुरख सुल्तान, आपणी बणत बणाइंदा। सचखण्ड बणाए सच मकान, सच सिँघासण आप वछाइंदा। साची सेजा कर परवान, दर घर साचे आप सुहाइंदा। उपर बैठ नौजवान, निरगुण आपणा धाम सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वास धराइंदा।

साचा बाढी सच्चा शाह, घर साचे सच सुहाइंदा। तख्त ताज इक्क बणा, आप आपणे मन्दर डाहंदा। चारे कूटां वेख वखा, दह दिशा आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी सेव कमाइंदा।

साचा बाढी सच सिँघासण, हरि साचा सच उपजाईआ। आप बणाए पुरख अबिनाशन, परम पुरख बेपरवाहीआ। सच दवारे आप टिकाए ना कोई पृथ्मी ना आकासण, पावा चूल ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा सूतर आपे लाईआ।

आपणा सूतर आपे ला, हरि आपे वेख वखाइंदा। आपे बणया बेपरवाह, आपे चीर चराइंदा। आपे वंडी देवे पा, आपणा हिसा आप वंडाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तख्त आप सुहाइंदा।

आपे रक्ख तिखा आरा, आपणी धार चलाइंदा। आपे चीरे चीरनहारा, सिध्धा चीर इक्क वखाइंदा। आपे फड़ सच कुहाढ़ा, आपणी हत्थीं आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बाढी दिस ना आइंदा।

साचा बाढी उठ बलवान, आपणा भार उठाइंदा। सच लगाए इक्क निशान, सच निशाना इक्क वखाइंदा। आर पार करे ध्यान, अद्धविचकार ना मुख छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी खेल खलाइंदा।

सच सिँघासण आपे ठोक, हरि साचा सोभा पाईआ। आप रखाए उपर चौदां लोक, लोआं पुरीआं चरनां हेठ दबाइंदा। उपर बैठ पढ़े सलोक, सो पुरख निरञ्जण आपे गाइंदा। हँ ब्रह्म ना सके कोई रोक, रोकणहारा दिस ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दर इक्क सुहाइंदा।

सच सिँघासण साचे मन्दर, हरि साचा सच सुहाइंदा । साढ़े तिन्न तिन्न रक्खे अंदरे अंदर, त्रैलोक भेव ना आइंदा। ताणा पेटा डूंघी कंदर, गहर गम्भीर आप उणाइंदा। बन्द किवाड़े मार जंदर, दर घर साचे आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बाढी खेल खलाइंदा।

साचा बाढी परवरदिगार, तखत ताज सुहाइंदा। नूर नुराना हो उजिआर, शाह सुल्ताना आसण लाइंदा। आपणा लेखा आप विचार, लेखा लेखे विच्च टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म अथाह बेपरवाह सिफ्त सलाह आप जणाइंदा।

सच सिँघासण सोभावन्त, सो पुरख निरञ्जण आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरञ्जण एका कन्त, घर साचे मंगल गाइंदा। एकँकारा होए मंगत, आदि निरञ्जण संग रखाइंदा। श्री भगवान चाढ़े रंगत, पुरख अबिनाशी आप उठाइंदा। पारब्रह्म आदि जुगादि ना होए भंगत, जुगा जुगन्तर खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बाढी पुरख करतार, ब्रह्मा विष्न शिव लक्ख चुरासी घड़नेहार, घड़ भन्ने बेपरवाहीआ। महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी खेल न्यारा। जुगा जुगन्तर मात अवतारा, भगतन करे सच प्यारा, दूत दुष्ट दर दुरकाईआ। (०६ १६२ १६३)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

२६) माघ कहे मैं भगतां दस्सणा सच, सहज सहज जणाईआ। गुरमुखो पड़दा लाह के वेखो काया माटी कच्च, कचन गढ़ सुहाईआ। तुहाढ़े अन्तर बैठा पुरख समरथ, घर विच्च आपणा डेरा लाईआ। जिस दा नक्क मूंह नहीं हत्थ, तत्तव तत्त ना कोई प्रगटाईआ। हकीकत विच्च सच, सति दए समझाईआ। साढ़े तिन्न करोड़ अंदर रिहा रच, रचना आपणी दए जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। (१६ ११२)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

३०) पुरख अबिनाशी करे खेल ना बुढ़ा ना नढ़ा, बाल जवान ना वेस वटाइंदा। नौं खण्ड पृथ्मी जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर डूंघी खारी किसे ना लभ्भा, निरगुण हत्थ किसे ना आईआ। जुगा जुगन्तर लोकमात आवे कर कर अज पज्जा, जन भगतां होए सहाईआ। जुग चौकड़ी लक्ख चुरासी जीव जंत खा खा हरि जू अजे मूल ना रज्जा, आपणी तृसना ना कोई बुझाईआ । कलिजुग अन्तम आया भज्जा, महांकाल चरनां हेठ दबाईआ। गोबिन्द नगरी अंदर सजा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। बाहरों आपणा पड़दा कज्जा, पंज तत्त ओढनी इक्क वखाईआ। ना कोई लोक रक्खे लज्जा, जन भगतां लाज आप रखाईआ। बिन नगारिउँ आपे वज्जा, चोट एका एक सुणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचा आपणे हत्थ रखाईआ। (१० १६१)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

३१) जगत सिँघासण पावा चार, चौखट रूप वखाईआ। भगत सिँघासण खेल अपार, साढ़े तिन्न हत्थ वंड वंडाईआ। कलिजुग सिँघासण पए भार, बलहीण दए दुहाईआ। भगत सिँघासण करे प्यार, घर खुशी इक्क वखाईआ। जगत सिँघासण जाए हार, आपणा माण गवाईआ। भगत सिँघासण होए उजिआर, दो जहान वज्जे वधाईआ। जगत सिँघासण जगत खुआर, जगत कूक कूक सुणाईआ। भगत सिँघासण सुहाए आप निरँकार, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणा रिहा जणाईआ ।

जगत सिँघासण रिहा चीक, रो रो नैणां नीर वहाइंदा। भगत सिँघासण रिहा उडीक, प्रभ चरन ध्यान लगाइंदा। जगत सिँघासण जगत शरीक, शिरकत घर घर आप बणाइंदा। भगत सिँघासण मेटे अन्धेरा तारीक, निरगुण नूर चन्द चमकाइंदा। जगत सिँघासण धोखा देवे हस्त कीट, ग़रीब निमाणयां धक्का लाइंदा। भगत सिँघासण सच कराए प्रीत, निमाण निमाणयां आप उठाइंदा। जगत सिँघासण जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे खेल आप लगाइंदा।

जगत सिँघासण नेत्र रोवे, नैणां छहबर लाईआ। भगत सिँघासण दुरमत मैल धोवे, बण सेवक सेव कमाईआ। जगत सिँघासण सीस वाल खोहवे, खुली मींढी रिहा वखाईआ। भगत सिँघासण लै के आए साचा ढोए, सोहँ ढोला इक्क सुणाईआ। जगत सिँघासण अन्तम मोए, जीवण नज़र कोई ना आईआ । भगत सिँघासण लेखा जाणे जहान दोए, निरगुण सरगुण आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार माण वडयाईआ।

जगत सिँघासण गिआ थक्क, आपणा बल गवाईआ । भगत सिँघासण राह रिहा तक्क, जगत ध्यान लगाईआ। जगत सिँघासण गिआ अक, कूड़े राजे बैठे आसण लाईआ। भगत सिँघासण रिहा नट्ठ, कवण वेला प्रभ मेरे उत्ते चरन टिकाईआ। जगत सिँघासण उल्टी होई मत, साची सिख्या ना कोई दृढ़ाईआ। भगत सिँघासण चरन कँवल बंधाए नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। जगत सिँघासण ख़ाली वखाए हत्थ, भंडार नज़र कोई ना आईआ। भगत सिँघासण सेवा करे पुरख समरथ, बण चाकर सेव कमाईआ । जगत सिँघासण तुटा हठ, धीरज धीर ना कोई रखाईआ। भगत सिँघासण हो प्रगट, पारब्रह्म वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण इक्को इक्क जणाईआ।

जगत सिँघासण मारे धाह, संगी नज़र कोई ना आइंदा। भगत सिँघासण बण मलाह, लोकमात फेरा पाइंदा। जगत सिँघासण करे ना, मैथ्थों भार झल्लया ना जाइंदा। भगत सिँघासण करे हां, निउँ निउँ खुशी नाल सीस झुकाइंदा । जगत सिँघासण भुल्ले आपणा थां, थान थनंतर नज़र कोई ना आइंदा। भगत सिँघासण पकड़े बांह, फड़ बांहों आप उठाइंदा। जगत सिँघासण बुद्धि होई कां, काग वांग कुरलाइंदा। भगत सिँघासण कहे पारब्रह्म आया सभ दा पिता मां, मेरे उपर आसण लाइंदा। भगत जन वेखो नेत्र नैण करो चा, चाउ घनेरा इक्क रखाइंदा। भुल्लयां भटकयां पावे राह, रहबर इक्को नज़री आइंदा। जग उजड़िआं दए वसा, सच दुआरे आप बहाइंदा । गुरमुख मुक्करयां लए मना, मोह मुहब्बत आपणे नाल बंधाइंदा। साचा दर दए खुल्ला, खुल्ल्ला वेहड़ा आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सिँघासण इक्क वड्डआइंदा।

भगत सिँघासण उच्चा वड्डा, हरि वड्डा आप वडयाईआ । जगत सिँघासण जावे नस्सा, थां नज़र कोई ना आईआ। भगत सिँघासण भगत दुआरे देवे सद्दा, जन भगतां रिहा

जगाईआ। जगत सिँघासण जाए भज्जा, अग्गे हो ना कोई बचाईआ। भगत सिँघासण घर घर देवे सद्दा, उच्ची कूक कूक अलाईआ। जगत सिँघासण टप्पदा जाए आपणी हद्दा, दूर दुराडा वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ।

भगत सिँघासण करे अरदास, प्रभ चरन ध्यान लगाईआ। कर किरपा शहनशाह शाबाश, तेरे हत्थ मेरी वडयाईआ। नित नित रक्खदा रहां तेरी आस, जुग जुग ध्यान लगाईआ। कँवल वेला करे जोत प्रकाश, जोती जाता बेपरवाहीआ। मेरी पूरी करे पूरब आस, मेहरवान हो सहाईआ। मेरी तृसना होए तृप्ताप, भुक्ख ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन कँवल इक्क टिकाईआ ।

भगत सिँघासण मंगे चरन धूढ़, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। साहिब सतिगुर आसा पूर, मनसा मन ही माहे खपाया। जुग चौकड़ी वसदा रिहों दूर, कलिजुग अन्तम नेड़े आया। तूं सर्ब कला भरपूर, बेअन्त तेरी शहनशाहिआ। मैं तेरा हुक्म मन्नां ज़रूर, ज़रूरत आपणी पूर कराया। कर किरपा बख्श नूर, नूर नूराना नूर दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाया।

चरन कँवल रक्ख भगवान, मैं इक्को ओट तकाईआ। उपर बैठ हो निगाहबान, जन भगतां दे वडयाईआ। मैं वेखां तेरा खेल महान, ख़ालक तेरी की चतुराईआ। हुक्म दे बण हुक्मरान, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। दो जहानां दे ज्ञान, निशअक्खर कर पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मैं वेखां तेरे महमान, दर बैठण सीस झुकाईआ। मैं तेरा संदेसा देवां घर घर बण अञाण, बाली बाला वड सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन कँवल उपर धर, मेरी पूरी आस कराईआ ।

चरन रक्ख प्रभ मेरे सीस, तेरे चरनां सीस निवाया। तूं साहिब सच्चा जगदीस, जगदीशर तेरा अन्त किसे ना आया। तेरे छत्तर झुल्ले सीस, दो जहान तेरे हुक्मे अंदर हुक्म मनाया। तेरी कोई ना करे रीस, सानी नज़र कोई ना आया। तेरी इक्को इक्क हदीस, साचा कलमा लएं पढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाया।

आपणा चरन रक्ख कंधे, दोए चरन ध्यान लगाया। भगत भगवान तेरे बन्दे, बैठे तेरा राह तकाया। लक्ख चुरासी जीव अन्धे, तेरा नूर नज़र ना आया। कूड़ी क्रिया लग्गे धंदे, धन्दा जगत ना किसे मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाया।

आपणा चरन रक्ख मेरी पिठ, मैं बैठा माण गवाईआ। तेरा खेल सदा अनडिठ, नेत्र

नज़र किसे ना आईआ। मैं हारया तूं गिआ जित, तेरी जित मेरी वडयाईआ । मैं साची सिख्या लवां सिख, सिखां इक्को नाम पढ़ाईआ। सेवा करन दा रक्खां हित, नित नवित्त सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन कँवल मेरे उपर टिकाईआ।

चरन कँवल रक्ख मेरे पट्ट, बेपरवाह तेरी वडयाईआ। मैं तेरा वेखां खेल समरथ, निरगुण धार चलाईआ। किस बिध लहणा देणा चुकाए चौदां हट्ट, चौदां तबक पन्ध मुकाईआ। निरगुण नूर कर प्रगट, प्रतक्ख आपणी खेल वखाईआ। भगत भगवान लए रक्ख, भगवन आपणी दया कमाईआ। सच्चा मार्ग इक्को दस्स, साची सिख्या सिख समझाईआ। आत्म परमात्म होए वस, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरे उपर आसण लाईआ।

ला आसण मेरे प्रभ, परम पुरख तेरी वडयाईआ। आपणे चरन नाल मैनूं दब्ब, मेरा दुःखड़ा रहे ना राईआ। मेरा नैण खुल्ला झब्ब, नित तेरा दरसन पाईआ। तेरे चरनी बहवां फब, मुख वेखां चाईं चाईंआ। दरसन करां रज्ज, जुग चौकड़ी आपणी भुक्ख मिटाईआ। मेरा पड़दा सतिगुर कज, उपर आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी पत मात रखाईआ।

तेरे उत्ते चढ़ांगा। सज्जा चरन पैहलों धरांगा। भगत भगवान बण के फड़ांगा । शाह सुल्तान बण के लड़ांगा। राज राजान बण के अड़ांगा। मूर्ख मुग्ध अज्ञाण बण के चढ़ांगा। चतुर सुघड़ सुजान बण के सच्चा ढोला पढ़ांगा। गहर गम्भीर गुण निधान बण के हुक्म हाकम करांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आपे करांगा।

तेरे उपर आसण लग्गेगा। पुरख अकाल दीपक जगेगा। भगत भगवान प्रेम अंदर मघेगा। लक्ख चुरासी जीव जंत अगनी तत्त दगेगा। परम पुरख सुल्तान मेहरवान सेवादार गजेगा। शब्द धुर निशान सज्जे हत्थ विच्च सजेगा। चौथी मंज़ल चढ़ निगहबान, ग़रीब निमाणयां पड़दे कजेगा। कर ख़ालक खेल महान, आपणी करनी कर कर कदे ना रज्जेगा। गुरमुखां दे दान, सदा संग रखेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चरन कँवल कँवल चरन मेरा पड़दा ढकेगा।

प्रभ तेरे चरन दी इक्क आस, आसा सर्ब तजाईआ। तेरे मिलण दी इक्क प्यास, प्यास रिहा वधाईआ। तेरे दरस दी इक्क ख़ास, ख़ाहश रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर मेला लए मिलाईआ।

मेल मिलावांगा। निरगुण हो के आवांगा। भगत दुआर सुहावांगा। ढाडी हो के

गावांगा। रागी हो के अलावांगा। बाग़ी हो के सभ नूं ढावांगा। सवांगी हो के जगत भुलावांगा। विस्मादी हो के गुरमुखां अंदर डेरा लावांगा। ब्रह्मादी हो के ब्रह्म ज्ञान जणावांगा। धुर दी वादी पिछली मेट मिटावांगा । बण के गाडी नवां राह चलावांगा। सृष्ट सबाई थक्की मांदी, राए धर्म दे हत्थ फड़ावांगा। गुरसिक्खी सच्ची औंदी जांदी, यद्द आपणी फेर प्रगटावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिँघासण तेरे उत्ते आपणा आसण लावांगा।

तेरे उपर आसण लाएगा। मेहरवान दया कमाएगा। चरन कँवल उपर टिकाएगा। धरत धवल सर्ब हिलाएगा। ज़िमीं असमान सर्ब कुरलाएगा। जंगल जूह उजाड़ बीआबान धीरज धीर ना कोई धराएगा। समुंद सागर हाहाकार, नेत्र नैणां नीर वहाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए जोड़ सीस झुकाएगा। भगत भगवन्त कर निमस्कार, सजदा इक्को इक्क जणाएगा। कुदरत वेखे कायनात, कादर कलमा नबी इक्क पढ़ाएगा। पिछला सभ दा जाए इतबार, मुजरम सभ नूं आप वखाएगा। सृष्टी भुल्ली भुल्ले जीव गवार, गुरू पीर अवतार पैगम्बर अग्गे हो ना कोई छुडाएगा। वेखो पैंदी मार, मारनहार हुक्म चलाएगा। सृष्ट सबाई सुट्ठे डूंघी गार, फड़ के बाहर ना कोई कढाएगा। अग्गे पिच्छे सज्जे खब्बे नज़र ना आए कोई यार, चौथी यारी चौथे जुग मेट मिटाएगा। नार कन्त ना करे प्यार, पुत्तर धी गोद ना कोई सुहाएगा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी गोद उठाल, अंग लगाएगा। इक्को घर सुहाए आप आपणे लाल, दूसरयां मुख ना कदे दरसाएगा। आप फिरे बण कंगाल, भगतां उच्चे तख्त बहाएगा। जलवा नूरी दे जलाल, जोबन आपणे रंग रंगाएगा। प्रगट हो दीन दयाल, दीनन आपणी गोद बहाएगा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग दा हल्ल करे आप सवाल, फिकरा अग्गे हो समझाएगा। वेखो औंदा ज़िवाल, ज़ेर ज़बर मेट मिटाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आपणा आसण लाएगा।

सिँघासण कहे प्रभ मेरे उत्ते सज, तेरा ध्यान लगाया। वेखीं धोखा दे ना जाईं भज्ज, वेला वक्त दे सुहाया। शेर हो के शब्द गज्ज, क्यों बैठा मुख छुपाया। पीर पैगम्बर गुर अवतार सारे कहन्दे साड्डी मुक्की हद्द, अग्गे राह ना कोई वखाया। मेहरवान हो के पड़दा कॅज, दोशाला आपणे हत्थ उठाया। तेरी किरपा बिन कोई ना सके बच, कलिजुग बाज़ी रिहा उलटाया। दीन दयाल तेरे अग्गे बोलया सच, सच्चा गुरमुख बिन तेरी किरपा नज़र कोई ना आया। जिध्धर वेखां भाण्डे कच्च, दर दर घर घर काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाया। जो तेरे अंदर गिआ रच, तूं आपणी छाती लगाया। तेरा खेल पुरख समरथ, नज़र किसे ना आया। श्री भगवान हो के डट, डंका आपणा नाम वजाया। की होया पंज तत्त काया गवार जट्ट, अंदर समरथ पुरख बैठा आसण लाया। इक्को खोल्ह भगत हट्ट, बिन भगती सभ दी झोली दए भराया । रातीं सुत्तयां दे दे मत, दिने उठदिआं महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नज़री आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सिँघासण भगत आपणी झोली रिहा डाहिआ।

भगत सिँघासण उठ वेख मार ध्यान, प्रभ की की खेल रचाइंदा। सारे मंगण दर ते दान, नेत्र अक्ख ना कोई उठाइंदा। पुरख अबिनाशी बड़ा शैतान, शरअ सबद दी अगली शब्द फड़ाइंदा। किसे हत्थ अञ्जील किसे हत्थ बाईबल शास्त्र सिमरत वेद पुरान किसे पढ़ा गीता ज्ञान, त्रिलोकी नाथ वंड वंडाइंदा। किसे मार बाणी नाम बाण, अणियाला तीर चलाइंदा। आप बैठा हो बेपछाण, बेख़बर ख़बर आपणी आप समझाइंदा। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग देंदा रिहा दान, सरगुण आपणा हुक्म मनाइंदा। कलिजुग अन्त प्रगट होया आण, प्रभ आपणा वेस वटाइंदा। साचे तख्त बहे नौजवान, तख्ता सर्ब उल्टाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जगत तख्त दए गवा, भगत सिँघासण दए बिठा, आसण अबिनाशन आप लगाइंदा।

सत्त नाल लग्गे वीह, बीस बीस ध्यान लगाईआ। सिँघासण कहे प्रभ मैं तेरे चरन लग्ग जावां जी, जीवण मेरी झोली पाईआ। जन भगतां घर खुशी वखावीं तीं, तिरंजण इक्को वार लगाईआ। सृष्ट सबाई पुट्ट दे नींह, जड़ रहण किसे ना पाईआ। वक्ख वक्ख करदे बक्करी शींह, शेर आपणा रूप वटाईआ। जन भगतां उपर थीं, थापड़ थापड़ गोद सलाईआ। मनमुख दोंह हत्थां दे धरींह, शौह दरयाए आप रुड़ाईआ। अग्गे बीज सच्चा बी, फुलवाड़ी भगत इक्क महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त वीह सति सतिवाद दूआ निरगुण सरगुण दाद सिफ़रा मेटे सर्ब सुआद, सिफ़र सिफ़र सिफ़र सर्ब लोकाईआ। (१३-६६१ ६६५) (१३ फग्गण २०१६)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

३२) सिँघासण कहे मैं गिआ डह, दर दुआरे डेरा लाईआ। मैं इक्को भगवान दी होण देणी जै, दूजा नाम ना कोई ध्याईआ। पिच्छे नाम इक्क दूजे नाल मरदे रहे खह खह, दीनां मज़हबां करी लड़ाईआ। हरि का नाम इक्को घर बहे, मन्दर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ वंड ना कोई वंडाईआ। जो जन रसना जिह्वा कहे, तिस आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

शब्द सिँघासण कहे मैं गिआ डट्ठ, आपणे चारे पैर जमाईआ। मेरे कोलों कोई भगत बाहर ना जाए नट्ठ, फड़ के बाहों अंदरे रखाईआ। एसे कर के वीह सौ वीह बिक्रमी कीता कट्ठ, इक्ठे इक्को घर वसाईआ। ना कोई शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश ज़ात पात ऊँच नीच ना कोई दस्सां मित, जो चल आया सरनाईआ। तिन्नां रंगाए आपणी प्रेम रत्त, रंग इक्को इक्क चढ़ाईआ। छोटयां वड्डयां सारयां देवां साची मत, वितकरा विच्च ना कोई रखाईआ। मिलो मेल पुरख समरथ, जिस मिलिआं दुःख रहे ना राईआ। जे नेत्र वेखो ते खण्डा दिसे हत्थ, जे अंदर वेखो ते जोत नूर रुशनाईआ। जे बाहरों कहो ते कुछ कहण पूरन जट्ट, जे अंदर वड़ के वेखो पुरख समरथ आपणी कार कमाईआ।

जे बाहरों वेखो दिसे बाज़ीगर नट, जे अंदर वेखो तां पति साचा रिहा मिलाईआ। जे बाहरों वेखो तां वेखदिआं सारी मारी जाए मत, जे अंदर वेखो ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाईआ। जे बाहरों वेखो वेख के सारे जाओ नठ्ठ, जे अंदर वेखो महिमा अकथ्थ करे पढ़ाईआ। जे बाहरों वेखो वेख के उबले रत्त, जे अंदर वेखो सच सीतगुर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचे वज्जे वधाईआ। (१४-२६२)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

३३) अगला सिँघासण कहे मैं सभ दा दाता, दर आयां पार कराइंदा। पिछला सिँघासण कहे मैं भगतां राखा, भगतां नेड़ कोई ना आइंदा। अगला सिँघासण कहे मैं पिता माता, जो आया आपणी गोद बहाइंदा। पिछला सिँघासण कहे मैं जोड़ां नाता, जिस दा जुड़या पिच्छे मुड़ कोई ना जाइंदा। अगला सिँघासण कहे मैं सज्जण साका, दर आपणा बंधन पाइंदा। पिछला सिँघासण कहे मैं कमलापाता, सिर सभना हत्थ रखवाइंदा । अगला सिँघासण कहे मेरे उत्ते पुरख समराथा, इक्को इक्क सोभा पाइंदा। पिछला सिँघासण कहे मैं इक्को इक्क जाता, अग्गे पिच्छे दूजा नज़र कोई ना आइंदा।

अगला सिँघासण कहे मेरा सोहणा रंग, नूरो नूर रंगाईआ। पिछला सिँघासण कहे मैं भगतां दस्सां ढंग, जाओ मंगो चाईं चाईंआ। अगला सिँघासण कहे मैं लावां अंग, पिछला सिँघासण कहे जिंनां चिर मैं ना घल्लां, कौण लग्गे तेरी पाईंआ। अगला सिँघासण कहे मेरा अनन्द, पिछला सिँघासण कहे बिन भगत चन्द हत्थ किसे ना आईआ। अगला सिँघासण कहे मेरा लंमां पन्ध, पिछला सिँघासण कहे मैं किरपा कर इक्को धक्का लगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, उह निरगुण एह सरगुण निरगुण सरगुण निरगुण निरगुण नाल मिलाईआ ।

एह खेल जिस वेख्या हुण, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग फेर नज़र किसे ना आईआ। बेशक ग़ुस्से विच्च आ के मारो घसुन्न, श्री भगवान दुःख ना कोई मनाईआ। फड़ के अगनी उत्ते दिउ भुंन, लंबू जगत लगाईआ। फिर वी कहे भगतो तुहाड्ढा हुण, तुसां मेरा लेखा आपणे लेखे लाईआ। जे तुहाड्ढे विच्च ना हुंदा गुण, क्यों भगवान औंदा चाईं चाईंआ। तुहाड्ढी पुकार रिहा सुण, क्यों बैठे मुख छुपाईआ। आपणे राग दी सुणाओ धुन, सारे इक्को वार सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै ढोला लाईआ। (१४ २६)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

३४) हुक्मे अंदर चाढ़े रंग, रंग रंगीला इक्क अखवाइंदा। हुक्मे अंदर सुहाए आत्म सेज पलँघ, सच सिँघासण डेरा लाइंदा। हुक्मे अंदर अनहद नाद वजाए मरदंग, साची सेवा आप कमाइंदा। हुक्मे अंदर सोहला ढोला गाए छन्द, रसना जिह्वा ना कोई हिलाइंदा। हुक्मे

अंदर जन भगतां मेटे आवण जावण पन्ध, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। हुक्मे अंदर होए साहिब बख्शंद, बख्शिश आपणी आप वरताइंदा। हुक्मे अंदर कलिजुग सड़दिआं पाए ठंड, सांतक सति सति कराइंदा। हुक्मे अंदर मेल मिलाए गुर गोबिन्द गुजरी चन्द, शब्द सतिगुर गुर शब्द आपणा घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, सन्त सुहेले साचे फड़, गुर गुर चेले वेखे दर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाजा भगत दुआर साजण साजा, शब्द अगम्मी मारे वाजा, कोझयां कमलयां रक्खे लाजा, जो जन सरनाई आइंदा। (१४ २२०)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

३५) सच सिँघासण पावा चार। झूठा दाअवा जीव गवार। (२६ पोह २०११ बि)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

३६) ओ जन भगतो जे तत्तां वाला जाए मर, ते खुशी लउ मनाईआ। पूरन गिआ ते फेर काहदा डर, मज़े नाल आपणा झट्ट लँघाईआ। जे मैं सतिगुर होया तुहाड्ढे अंदर जावांगा वड़, एह मेरी बेपरवाहीआ। जिथ्थे होवोगे उथ्थे जावांगा खड़, राती सुत्तयां लवां जगाईआ। जे तुसीं मेरे नाल पउगे लड़, हत्थ जोड़ के वास्ता पाईआ। क्यों तुसीं मेरा रहण वाला घर, तुहाड्ढे बिना दर ना कोई सुहाईआ। तुसीं मेरा देण वाला वर, वर दाता तुहाड्ढा इक्को माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ। (२६ पोह शै सं ५)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

३७) हरि सिँघासण अडोल, विच संसारया। हरि सिँघासण अडोल, ना कोई तोल तुला रिहा। हरि सिँघासण अडोल, ना कोई बणत बणा रिहा। हरि सिँघासण अनमोल, जुगो जुग मात धरा रिहा। हरि सिँघासण अडोल, सतिजुग साचे धरत मात टिका रिहा। हरि सिँघासण अतोल, अठारां भेखी वेखा वेखी लाल धार खेल रचा रिहा। हरि सिँघासण अडोल, ना कोई जाणे जगत डोला, ना कोई बणत बणा रिहा। हरि सिँघासण जगत अतोला, त्रेते आपणा आप उपा रिहा। हरि सिँघासण सदा अडोला, दोए दोए लेख लिखा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, ना कोई मात वखा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, जुगो जुग जुगन्ती मात बणा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, ना कोई मात वखा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, शब्द छत्तर हत्थ फड़ा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, ना कोई पहने अस्त्र

शस्त्र, चक्कर सुदर्शन उपर टिका रिहा। हरि सिँघासण अतोला, द्वापर वेख वखा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, साची जड़ती आप जड़ा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, कलिजुग रक्खे पड़दा उहला, गुर पीरां भेव ना पा लिआ। हरि सिँघासण अतोला, पा सरगुण मात चोला, काया देही ना किसे बणा लिआ। हरि सिँघासण अडोला, धुरदरगाही सच स्नेही, आप आपणे हत्थ रखा रिहा। आप तजाए काया देही, जोती जामा पा लिआ। जोत निरञ्जण निर विकार, निरगुण सरगुण दोवें लेख लोकमात लिखा रिहा। जोती जामा धरया भेख, हरि आपणी बणत बणा रिहा। हरि सिँघासण अतोल, कलिजुग तेरे अन्तम वेले बेमुखां पड़दे देवे खोलु, साची बणत बणा रिहा। जोती जामा श्री भगवाना, साची रचन रचा रिहा। हरि सिँघासण अतोल, चार कुण्ट चार चुफेर धरत मात वेख वखाईआ । हरि सिँघासण अतोल, पुरख अबिनाशी साचे भेख, साचे धाम वंड कराईआ। हरि सिँघासण अतोल, गुर गोबिन्दे लिखया लेख, निहकलंक दए उपजाईआ। हरि सिँघासण अतोल, हरि साचा साची गणत गिणाईआ। हरि सिँघासण अतोल, गुरमुख साचे सन्त दुलारे धरत मात तेरी गोद उठाईआ। हरि सिँघासण अतोल, सिँघ मनजीत ना जाए डोल, प्रभ भाणे आप रखाईआ। हरि सिँघासण अतोल, जगत जगदीशे किहा बोल, तेरी वारी मात अन्तम आईआ। हरि सिँघासण अतोल, प्रभ पाकी पाक नीहां हेठ चुणाईआ । हरि सिँघासण अडोल, साचा मन्दर आप सुहाईआ। हरि सिँघासण अडोल, अठां तत्तां बणत बणाईआ। हरि सिँघासण अतोल, नावें दर खोलु वखाईआ। हरि सिँघासण अतोल, दसवां आपणे हत्थ रखाईआ। हरि सिँघासण अतोल, नावें उपर पड़दा पाईआ। हरि सिँघासण अतोल, बारां चार लेखा रिहा लिखाईआ। हरि सिँघासण अतोल, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, बैठ इकांत आपणी बणत बणाईआ।

हरि सिँघासण अतोल, मात बणाइंदा। हरि सिँघासण अतोल, चार चार चार चार, चार चुफेर रखाइंदा। निरगुण सरगुण दोवें रूप, हीआं सेरू आप जणाइंदा। साचा ताणा प्रेमी बाण, नौं तन्दी आप उणाइंदा। तिन्न तिन्न रक्खे एका धारा, इक्क दूजे उपर लँघाइंदा। तिन्ने दिशा वारो वारा, नावें घर तिन्न तिन्न जोड़ जुड़ाइंदा। लेखा लिखे हरि जी गिण गिण, साची बणत बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, सच सिँघासण कर त्यार, लोकमात तेरे उपर चरन छुहाइंदा।

जोती जामा श्री भगवाना, आप आपणे रंग समाइंदा। सच सिँघासण देवे रक्खव। कलिजुग तेरी अन्तम साची वस्त करे वक्खव। चार कुण्ट दह दिशा किसे हत्थ ना आए, ना कोई मुल्ल चुकाए करोड़ लक्खव। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण धरत मात टिकाया।

गुरमुखां साचा माण दवाया, आपे रक्खे दे कर हत्थ। सच सिँघासण दसम दवारया। प्रभ अबिनाशी साचा आसण दिस किसे ना आ रिहा। करे खेल हरि शब्द स्वासन, मात पताल अकाशन बणत बणा रिहा। जोत निराली घनकपुर वासण, शब्द जलाली रंग चढ़ा

रिहा। गुरमुखां लहणा देणा देवे हक़ हलाली, आत्म दर ना रहे खाली, हरि सच भंडार भरा रिहा। जगत अव्वलड़ी चली चाली, कलिजुग जगी जोत अकाली, गुरमुखां बणया आपे पाली, भाणा आपणे हत्थ रखा रिहा। कोई ना मंगे विच दलाली, फल लगाए साची डाली, अमृत मेवा रसना जिह्वा आपे आप खवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, सति सिँघासण आप बिराजे, करे खेल देस माझे, भगत जनां हरि साजन साजे, साचा लेखा लेख लिख रिहा। (४-५६५) (१ माघ २०११)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

३८) सच पलँघ प्रभ आप सुहाया। लुहार तरखाण ना किसे बणाया। जगत वाण ना कोई उणाया। शब्द बिबाण इक्क रखाया। आपे बैठ श्री भगवान, साची बणत बणाया। वेख वखाए वाली दो जहान, दिस किसे ना आया। इक्क झुल्लाए सच निशान, सति पुरख अबिनाशी आप उठाया। लोआं पुरीआं वेखे मार ध्यान, लक्ख चुरासी विच समाया। लोकमाती गुर गुर पीरां साधन सन्तां ब्रह्म ज्ञान शब्द सुनेहड़ा रिहा घलाया। उपजे धुन तुट्टे सुन काया मन्दर सच मकान, बेड़ा साचा हत्थ वखाया। मंगे मंग शब्द दान, उडे उठाए विच बिबाण, खाणी बाणी होए हैरान, जाणी जाण मेल मिलाया। जोत जामा धुर दी बाण, कलिजुग करे पछाण, वेख वखाए राज राजान, चतर सुघड़ सिआण ज्ञान बोध, बोध अगाधा प्रभ आप अखवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण इक्क सुहाया।

शब्द सिँघासण हरि बिराजे, जोती जोत जगाईआ। एका रक्खे सीस ताजे, दो जहानां राज कमाईआ। आप सवारे आपणा काजे, शब्द निशाना साचा तीर जगत कमान उठाईआ। वेख वखाणे सन्त औलीए शेख़ मुलां पीर जगत नायक मुसायक रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच सिँघासण बैठ हरि, पावा चूला ना कोई रखाईआ।

पावा चूल ना रक्खया कोए, प्रभ साचे बणत बणाईआ। खाली हत्थीं वस्सया दिवस रैण कदे ना सोए, ना जन्मे ना मोए, अठ्ठे पहर गुरमुख अंदर वड्ड वड्ड हस्सया।

शब्द निराला तीर कस्सया। दिस ना आए लोचन दोए, मेट मिटाए अन्ध अन्धेरी रैण मस्सया। एका राह साचा दस्सया, जो जन सरन सरनाई साची होए। घट घट अंदर आपे वस्सया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण डेरा लाए, दिवस रैण डगमगाए। ६ चेत २०१३ बिक्रमी

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

३९) शब्द सिँघासण हरि बिराजे, लोक लाज तजाई। पुरख अबिनाशी घट घट वासी हरि दाता शाहो शाबासी आत्म वेख सेज विछाई। काया मण्डल पाए रासे, कवण दवार

वज्जे शब्द वधाई। किसे कम्म ना आए काया सुख, काया झूठी माटी अन्त विनासे। गुरमुख साचे सन्त जनां ज्ञान बोध प्रभ शब्द जणाए भाग लगाए काया कासे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा वेख दर, शब्द सिँघासण डेरा लाए।

शब्द सिँघासण हरि सुहाया, करे खेल अपारया। लोकमात किसे दिस ना आया, भुल्ले जीव गवारया। महल्ल अट्टल इक्क अपारया। दर घर साचे आपे डाहिआ, शब्द कराया पहरेदारया। जोत सरूपी आसण लाया, पृथ्मी आकाशन वेखण आया। शब्द स्वासन लए बचाया। सति सरूपी सति समाया । जोती जोत सरूप हरि, एका मंगे शब्द वर, जगत सिँघासण मूल ना भाया। (६ चेत २०१३ बिक्रमी)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

★ ६ भादरों २०२१ बिक्रमी बलवन्त सिँघ दे गृह सेवक कालोनी पटिआला ★

४०) सरगुण धार ना कोई जड़त, बाडी बणत ना कोई बणाइंदा। अक्खरां विच्च ना कोई पढ़त, कलम शाही वंड ना कोई वखाइंदा। ज़िमीं असमान ना कोई धरत, महल्ल अट्टल रूप रंग ना कोई जणाइंदा। एहो खेल प्रभू असचरज, जुग चौकड़ी समझ कोई ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कह कह गए मरदाना मर्द, मेहरवान खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण इक्क दृढ़ांइंदा।

हरि सिँघासण अगम्म अथाह, महिंमा अगणत गणी ना जाईआ। आप उपाए बेपरवाह, बेअन्त दया कमाईआ। आपणी इच्छया लए रखा, आप आपणे विच्च समाईआ। जगत जुग कोई जाणे ना, भेव अभेद ना कोई खुल्ह़ाईआ। ज़िमीं असमान रंग माणे ना, पावा चूल ना कोई वडयाईआ। चन्दोआ चन्दन कोई ताणे ना, हीरे जड़त ना कोई जुड़ाईआ। चार कुण्ट दह दिशा कोई वेख वखाणे ना, नाप माप ना कोई समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्ह़ाईआ।

हरि सिँघासण अगम्म अपार, हरि अपरम्मपर आप बणाइंदा। जिस दी मिसल मिसाल ना विच्च संसार, इशारे नाल ना कोई दृढ़ांइंदा। जिस दा लेखा जाणे ना कोई लोहार, तरखाण, घाड़त घाड़ ना कोई घड़ाइंदा। जिस नूं समझ ना सके जुग चार, चारे खाणी चारे बाणी भेव कोई ना आइंदा। जो मंज़ले मकसूद वस्सया सभ तों बाहर, बेनज़ीर आपणी नज़र विच्च रखाइंदा। जिस नूं सजदा करण पीर अवतार, गुर गुर सीस झुकाइंदा। सो तख्त निवासी साचा तख्त जाणे आप निरँकार, निरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। सच संदेशा नर नरेशा आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवणहार, बिन रसना जिह्वा बोल सुणाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां करके ख़बरदार, शब्दी शब्दी शब्दी राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्ह़ाइंदा।

सच तख्त जोत सरूप, जोती जाता आप जणाईआ। जिस दा रंग रूप ना किसे कूट, दह दिशा नज़र कोई ना आईआ। ना कोई धागा ना कोई सूत, सूतरधारी समझ किसे ना आईआ। बैठणहारा पंज भूत, तत्तव तत्त ना कोई रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण इक्क रखवाईआ ।

सच सिँघासण पुरख अकाल, अकल कल धारी आप उपाइंदा । जिस दे उपर ना कोई चादर ना कोई ओढण दिसे रुमाल, खटीआ रूप ना कोई वटाइंदा। ना कोई दीवा बाती देवे बाल, जल धार ना कोई वहाइंदा। ना कोई वेखे काया माटी खाल, ख़ालक ख़लक ना किसे समझाइंदा। सचखण्ड दवार रखया सची धर्मसाल, जिस दा आर पार मध नज़र किसे ना आइंदा। तख्त निवासी बैठ नौजवान, शाह पातशाह आपणा हुक्म सुणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करो ध्यान, जोती जाता इक्क जणाइंदा। सति संदेशा इक्क फ़रमान, सति सतिवादी इक्क समझाइंदा। इक्को अक्खर जिस दा सिफ्तां विच्च ना होए ब्यान, कलम शाही रंग ना कोई रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक्क दृढ़ांइंदा।

हरि का तख्त सिँघासण किसे ना जड़या, ज़र जोबन नज़र कोई ना आईआ। जोत सरूप उपर चढ़या, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सति सतिवाद सच दवारे खड़या, दो जहानां वेख वखाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निअक्खर इक्को पढ़या, इशारे नाल समझाईआ। सच दवारा वेखो घरया, गृह मन्दर सोभा पाईआ। निरभउ चुकाए भय डरया, भव रूप ना कोई वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर सच्चा इक्क सुहाईआ।

सच सिघासण पुरख परमात्म, हरि करता आप उपाइंदा। जिस नूं समझ ना सके कोई आत्म, लक्ख चुरासी नज़र किसे ना आइंदा। जिस दा खेल अगम्मी बातन, ज़ाहर ज़हूर वंड ना कोई वंडाइंदा। अक्खरी सिफ्ती सारे आखण, बिन अक्खर ना कोई समझाइंदा । करे खेल पुरख अबिनाणन, अबिनाशी आपणी कार कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर के दासी दासन, बाले नंनू अंञाणे आपणे हुक्म चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा पड़दा आप उठाइंदा।

सच सिँघासण चढ़ भगवन्त, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सच संदेशा देवे मंत, मंत्र इक्को इक्क समझाईआ। नाता जोड़ के नार कन्त, सेज सुहञ्जणी लए सुहाईआ। भेव खुल्ला के आदि अन्त, अन्तर आपणा रंग रंगाईआ। जिस बणाई तुहाढ्ढी बणत, सो ठाकर स्वामी बेपरवाहीआ। बोध अगाधा धुर दा पंडत, साची सिख्या दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाणा इक्क उपाईआ।

(६ भादरों २०२१ बिक्रमी) (१७-२५२ २५३)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

४१) धरनी कहे प्रभू मेरी सुण पुकार, सहज नाल सुणाईआ। सतिगुर पूरन बणा सेवादार, साची तेरी सेव कमाईआ। अमृत वेले आवे उठ के भगत दवार, नित नित आपणी कार कमाईआ। तेरा सिँघासण करे त्यार, तिन्न सौ सठ दिन रंग रंगाईआ। चवर झुलाए अपर अपार, आप आपणी कार कमाईआ। तेरा लहणा देणा पूरा होवे विच्च संसार, संसारी भण्डारी सँघारी संग रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

सिँघासण कहे प्रभू मेरा रिहा कोई ना माण, हरिजन बैठे मुख भवाईआ। मैं होया निताणयां ताण, दर तेरे सीस झुकाईआ। तूं साहिब मेरा सुल्तान, शहनशाह अगम्म अथाहीआ। मेरी बेनन्ती कर परवान, परम पुरख दे वडयाईआ। जुग रीती बदलणी तैनूं असान, असानी नाल दे समझाईआ। मैं तेरे दर निमाणी हो के डिगी आण, चरन धूढ़ी खाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सच रंग रंगाईआ।

सिँघासण कहे प्रभू मैनूं पहली अस्सू सिँघ पूरन करे त्यार, दूसर हत्थ ना कोई लगाईआ। एह सच्चा सेवादार, जुग जुग सेव कमाईआ। एह मंगी मंग जिस वेले सत्थर हंढ़ुाया यार, माछूवाड़ा दए गवाहीआ। उह वक्त सुहञ्जणा पहुँचया आण, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। तूं होणा मेहरवान, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मेरी बेनन्ती कर परवान, परम पुरख तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। २३ ८१७ ८१८)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

★ ५ जेठ २०१५ बिक्रमी कलसी लिखत होई जगत सिँघासण दे नवित्त
जो महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दे सरीर करके रिहा सी
छिआठ साल तों बाद मातलोक विच्च चुक्कया गिआ ★

४२) शब्द सिँघासण हरि लोकमात उपाया। साल बवंजा खेल अपार, खेलणहार सृष्ट सबाया। पंज तत्त वेस निरँकार, निरगुण सरगुण विच्च समाया। लोआं पुरीआं वेख विचार, धरत मात डेरा लाया। अचरज खेल हरि निरँकार, आपणा आप कराया। वेख वखाणे आपणी धार, जुग जुग वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणे विच्च टिकाया।

शब्द सिँघासण हरि रंग राता, लोकमात वछाया। आपे बैठा इक्क अकाता, अंदरे अंदर रखवाया। वेखे खेल दिवस राता, दिवस रैण सुहाया। सृष्ट सबाई जगत पित माता, दाता दानी आप अखवाया। जन भगतां देवे इक्क सुगाता, देवणहार आप अखवाया। चरन कँवल बंधाए साचा नाता, घर साचे मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन सज्जण वेख वखाया।

शब्द सिँघासण अपर अपारा, पंज तत्त करे प्यारया। लोकमात कर विचारा, उपर आसण ला रिहा। करे खेल सिरजणहारा, साची कल वरता रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगा रिहा।

रंगे रंग हरि भगवन्ता, आपणी धार चलाईआ। खेले खेल आदिन अन्ता, जुग जुग वड्डी वडयाईआ। सेव लगाए मनी सिँघ सन्ता, सतिगुर पुरख मनाईआ। रसना जिह्वा गाया गुणी गणंता, हरि गोबिन्द वेख वरवाईआ। साची नारी पाया एका कन्ता, कन्त सुहाग हंढ्ढाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्ता, लोकमात वेख वरवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग जीवण दाता आप अखवाईआ।

शब्द सिँघासण हरि बिराजे, पंज तत्त डेरा लाया। आप कराया आपणे काजे, गत मित ना कोई जणाया। खेलया खेल देस माझे, घनकपुर वासी नाउँ धराया। दो जहानी साजन साजे, सतिगुर पूरा भेव ना पाया। लक्ख चुरासी देवणहारा वाजे, कलिजुग पल्ले गंढु बंधाया। जन भगतां रक्खणहारा लाजे, आप आपणी दया कमाया। चरन प्रीती रक्खे सांझे, साचा कर्म कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठा दिवस सुहाया।

पंचम जेठा लोकमात, काया तन उपाइंदा। आपे वेखे मार झात, आपणा राग सुणाइंदा । आपे देवे आपणी दात, आपणी झोली आप भराइंदा। उत्तम करी आपणी ज़ात, जागरत जोत जगाइंदा। गुरमुख साजण लै बरात, घर साचे मंगल गाइंदा। दूर दुराडी वेखे वाट, नेरन नेरा फेरी पाइंदा। आप चढ़ावणहारा औखे घाट, पार किनारा इक्क दिसाइंदा। कलिजुग चोली जाए पाट, ना कोई धीर धराइंदा। सच वस्त ना दिसे किसे हाट, वणज वणजारा ना कोई अखवाइंदा। चारों कुण्ट खेल बाजीगर नाट, नट नटूआ सांग वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठा दिवस सुहाइंदा।

पंचम जेठा हरि वड पाया, गोबिन्द बणत बणाईआ। सन्त मनी सिँघ सेवा लाया, साचा लेख लिखाईआ । देवी देवा भेव ना राया, भरमे भुल्ली लोकाईआ। गुरमुखां आत्म मेवा इक्क खवाया, हरि सोहँ चोग चुगाईआ। रसना जिह्वा जिस जन गाया, साचा जोग इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका धार चलाईआ।

एका धार हरि निरँकार, पंज तत्त रखाइंदा। दूजा कर शब्द प्यार, तीजे दर सुहाइंदा। चौथे मेल आपे कर, पंचम संग रलाइंदा। छेवें चुक्के जगत डर, प्रभ साचा आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणी खेल खिलाइंदा।

एका खेल हरि करतार, आपणी आप कराईआ। दूजी वारी विच्च संसार, जोती धार बंधाईआ। तीजा शब्दी पहरेदार, गुरमुखां सेव कमाईआ। चौथे मिल्या मीत मुरार, घर मन्

दर इक्क सुहाईआ। पंचम मेला हरि करतार, करनहार सृष्ट सबाईआ। छेवें कर इक्क विचार, निरगुण रूप समाईआ। छे छे साचा कर प्यार, छे छे जोड़ जुड़ाईआ। बावन बवंजा एका कार, चौदस संग रलाईआ। एका चौका हरि निरँकार, एका पद रखवाईआ। पंज दो कर प्यार, पंज तत्त हंढ्ढाईआ। दोहां विचोला सिरजणहार, साची कार कमाईआ। बदलया चोला खेल अपार, जोती जामा भेख वटाईआ। सोहँ ढोला शब्द जैकार, चारों कुण्टा रिहा सुणाईआ। सम्मत पंदरां कर विचार, बीस सद बिक्रमी नाल रलाईआ । भगत सिँघासण पावे सार, विष्नूं वंसी नाउँ धराईआ। लक्ख चुरासी दुष्ट सँघारे काहना कंसी, दिस किसे ना आईआ। गुरमुख साजण इक्क वखाए साची बंसी, ब्रह्म ज्ञान जणाईआ। एका धार चलाए तरवर सरवर पंखी पंछी, एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, सृष्ट सबाई रिहा हिलाईआ।

सृष्ट सबाई इक्क हुलारा, देवणहार भगवाना। शब्द सिँघासण अपर अपारा, हरि रक्खे दो जहानां। बवंजा तेरा करे विचारा, परम पुरख सुल्ताना। चौदां लोकां वसे बाहरा, ना दिसे कोई टिकाना। कलिजुग अन्तम लए अवतारा, खेले खेल महाना। कलिजुग सिँघासण आर पारा, करे कराए आप निधाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठ शब्द सिँघासण वेखे हरि, जगत सिँघासण अग्गे धर, लक्ख चुरासी बन्ने गाना।

जगत सिँघासण जाए उठ, पंज तत्त ना कोई बराजे। साध सन्त लुकया रहे ना किसे गुठ्ठ, ना कोई सीस रखवाए ताजे। प्रभ लहणा देण मुकाए जूठ झूठ, प्रगट जोत देस माझे। जन भगत सुहेला आपे जाए तुठ, आप रचाए आपणा काजे।

कलिजुग तेरा झूठा दावा, हरि साचे वेख वखाणिआ। जगत सिँघासण चार पावा, नीचे मुख ध्यानया। दर दर घर घर रोवण पुत्रां मावां, प्रभ साचा वरते भाणया। किसे ना माणी ठंडी छावां, ना कोई देवे ठंडा पाणीआ। गुरमुख साजन तेरे दर ते बल बल जावां, जिस मिल्या सतिगुर पूरा हाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत सिँघासण देवे वर, लेखा चुक्के चारे खाणीआ ।

चारे खाणी चारों चूल, चारों कुण्ट बंधाईआ। गुरमुख साजन ना जाणा भूल, लहणा देणा रिहा मुकाईआ। करे खेल वड दूलों दूलु, दो जहानां वेख वखाईआ। जन भगतां करे सूलीउँ सूल, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। वेला वक्त ना जाणा भूल, हरि पूरा लेख लिखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठ रुत्त सुहाईआ।

जगत सिँघासण मार उडारी, एक रंग समाया। तिन्नां लोकां वस्सया बाहरी, दिस किसे ना आया। घर घर पौंदा जाए खुआरी, प्रभ साचे हुक्म जणाया। वीह सद पंदरां तेरी वारी, निहकलंका फेरा पाया । चारों कुण्ट फिरे बहारी, धूड़ चरन रहण ना पाया। देवत सुर ब्रह्मा विष्न शंकर शिव राह तक्क तक्क रहे हारी, औदां जांदा दिस ना आया।

गुर संगत तेरी आई वारी, हरि साचे खेल रचाया। जगत सिँघासण पार किनारी, प्रभ आपणे कंध उठाया। निरगुण जाए उच्च महल्ल अटारी, भेव कोई ना राया। जन भगतां पैज जाए सुआरी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहणा आपे पूर कराया।

साल बवंजा माणी सेज, जगत सिँघासण तेरी निमस्कारया। शब्द सुनेहड़ा पुरख अकाला रिहा भेज, कलिजुग अन्तम वारया। सृष्ट सबाई नौं खण्ड जल धारा वहे नौं नौं नेज, जगत पलँघ ना कोई वछा रिहा। हरि जोती नूर चमके तेज़, दमक दामनी आप वखा रिहा। साध संगत बणी शमस तबरेज़, गुर पूरा चरन धूड़ सूली इक्क वखा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा सिँघासण पुरख अबिनाशन, लोकमात आप मिटा रिहा।

पंज तत्त तेरा सहारा, लोकमात तजाया। पुत्तर धीआं ना कीआ प्यारा, साक सनबंध ना कोई रखाया। एका दान साध संगत दीआ, दूसर हत्थ किसे ना आया। आपे करया निर्मल जीआ, चरन चरनोदक मुख प्याया। पंचम जेठ कर कर हीआ, आप आपणा कर्म कमाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सिँघासण तेरा दर, तेरे दर बहाया।

जगत सिँघासण रिहा पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाइंदा। तेरा कीआ सच प्यार, आपणी छाती उत्ते लिटाइंदा। करवट लै क्यों मारे मार, जिध्धर चाहें उध्धर सीस निवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका बचन आप सुणाइंदा।

जगत सिँघासण तेरा दुःख, दिवस रैण मोहे भाया। तेरी सेजा लिआ सुख, बवंजा साल हंढ्ढाया। पैहलो छुपाया आपणा मुख, फिर तैनूं लै जावण आया। लक्ख चुरासी पौणी आपणे मुख, तेरा वड्डा मुख रखवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत सिँघासण दे मत आप समझाया।

जगत सिँघासण गिआ मन्न, दोए जोड़ करे निमस्कारा। प्रभ अबिनाशी तेरा भाणा धन्न, लोकमात करे प्यारा। पंचम जेठ निकलया जन वीह सद पंदरां लेख लिखारा। सृष्ट सबाई सुण लउ कन्न, चारों कुण्ट होए हुलारा। गुरमुखां सांतक सति वरताए साचे तन, देवे शब्द प्यारा। जूठा झूठा भाण्डा देवे भन्न, आपे वेखणहार ठठिआरा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सन्त मनी सिँघ तेरा लहणा देणा रिहा उतारा।

सन्त मनी सिँघ चाढ़ी भाजी, आपणा लेख लिखाया। कलिजुग अन्तम प्रगट होवे शाहो सुल्तान चढ़के आवे शब्द घोड़े साचे ताजी, गुर संगत संग रखाया। गुरमुखां रक्खणहारा लाजी, लाजावन्त आप हो जाया। जगत सिँघासण तेरी इक्को लग्गी पुठी बाजी, नौं खण्ड

दोए उठाया। मेट मिटाए मुला शेख़ मुसाइक काजी, हज़रत पीर दस्तगीर शाह हकीर कोई रहण ना पाया। ना कोई दीसे जगत निमाज़ी, रोज़ा बांग ना कोई जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत सिँघासण देवे वर, तेरा वस्सया एका घर, प्रभ साचे आप वसाया।

जगत सिँघासण मार उडार, एका राह तकाइंदा। पुरख अबिनाशी कर प्यार, मैं तेरा राह तकाइंदा। करे कराए करनहार, आपणी क्रिया किरत कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत किनारा दए हुलारा, अन्तम पार कराइंदा। जगत हुलारा देवणहारा, एका एक अखवाया।

जगत सिँघासण शब्द सिँघासण मेल मिलाए अद्धविचकारा, आप आपणा संग रखाया। शब्द सिँघासण करे प्यारा, लोकमात उठ धाया। जगत सिँघासण हाहाकार, लक्ख चुरासी रिहा सुणाया। पारब्रह्म तेरा खेल न्यारा, भेव किसे ना पाया। नीचे उपर दए हुलारा, आवण जावण दिस ना आया। पंचम जेठ वीह सद पंदरां पार किनारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप पार कराया।

आदि पुरख हरि भगवन्ता, पारब्रह्म अखवाया। खेले खेल जुगा जुगन्ता, जुग जुग वेस वटाया । इक्क इकल्ला आदिन अन्ता, एकँकारा रूप समाया । मेल मिलाए साचे सन्ता, सतिगुर पुरख अखवाया। वेख वखाए जीवां जंतां, लक्ख चुरासी विच्च समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण खेल करे रघुराया।

आदि पुरख हरि भगवाना, एका एक अखवाइंदा। खेले खेल दो जहानां, आप आपणी धार बंधाइंदा। गुरमुख साचे चतुर सुजाना, आप आपणा मेल मिलाइंदा। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञाना, एका बूझ बुझाइंदा। एका रंग श्री भगवाना, ना कोई दूसर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मीत मुरार आप हो जाइंदा।

आदि पुरख प्रभ बेअन्त, भेव किसे ना पाया। मेल मिलावा साचे सन्त, जुग जुग मेल मिलाया। आपे नारी आपे कन्त, साची सेज हंढुाया। देवे नाम खजाना वड धनी धनवन्त, एका पल्लू नाम फड़ाया। दे वड्डिआई जीव जंत, जागरत जोत दए जगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे भाणे विच्च रहाया।

आदि पुरख पारब्रह्म पतिपरमेश्वर, जोत निराली अकालीआ। खेले खेल जगत जगतेशवर, आपणी चले अवल्लड़ी चालीआ। वेख वखाए ब्रह्म विष्न शिव महेशवर, साह शहाना वाली दो जहानीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणे दर होए सवालीआ।

आपणा दर मंगणहारा, परम पुरख अखवाया। आपणी झोली भरनहारा, आपणा भंडार रिहा वरताया। आपणी किरपा करनहारा, करनी करता नाउँ धराया। आपणा कारज करनहारा, जुग जुग करदा आया। मरे जन्मे जन्मे मरे, जुग जुग आपणा खेल रचाया। जोत सरूप वसे तन तन मे, पंज तत्त रूप बणाया। मात कुक्ख जननी जन्मे, जन जणेदी लए तराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा वेस वटाया।

आपणा वेस आदि निरञ्जण, जुग जुग आप वटाइंदा। सर्ब जीआं दर्द दुःख भय भंजन, भय भंजन नाम रखाइंदा। जन भगतां नेत्र पाए अंजन, इक्क ज्ञान दृढ़ांइंदा। चरन धूड़ कराए साचा मज़न, दुरमत मैल गवाइंदा। भगत सुहेला आए पड़दे कज्जण, लोकमाती वेस वटाइंदा। गढ़ हँकारी झूठे भज्जण, कलिजुग तेरा रूप तेरी धार वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमाती जोत जगाइंदा।

लोकमात हरि अवतारा, जुग जुग आप कराया। ब्रह्मा वेता लिखे लिखारा, वेद विदांता नाल रलाया। शिव शंकर लाए एका नाअरा, हत्थ त्रिसूल उठाया। करोड़ तेतीसा मंगे सच वपारा, सुरपत राजा इन्द रिहा कुरलाया। पुरख अबिनाशी देवणहारा, जुग जुग भंडार भराया। लोकमात पावे सारा, आपणा रूप वटाया। त्रैगुण तेरा इक्क प्यारा, पंचां नाल बंधाया। पंज पंजी वेख विचारा, चौबीसा नाउँ रखाया। हड्ड मास नाड़ी रत्त तन लाए गारा, महल्ल अट्टल सुहाया। मन मत बुध दए सहारा, हरि साचे संग रलाया।

नौं दवारे लाए तन, मानुस मानुख आप उपाया। पंच विकारा देवे डंन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल रलाया। आपे वस्सया बिन छप्परी छन्न, महल्ल अट्टल ना कोई रखाया। जन भगतां पुकार सुणे आपणे कन्न, दिवस रैण वेख वखाया । सेवा लाए सूरज चन्न, रव सस लए तराया। तारा मण्डल बेड़ा बंन, गगन गगनंतर वेख वखाया। अकाश प्रकाश कहे धन्न धन्न, धन्न धन्न तेरी वडिआया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस वटाया ।

अपणा वेस आप वटाए, जुग जुग करदा आया। सतिजुग त्रेता पार कराए, द्वापर लेख लिखाया। कलिजुग तेरी धार बंधाए, आप आपणा वेख वखाया। लक्ख चुरासी भेव ना राए, भेव अभेदा अछल अछेदा बैठा भेव छुपाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग वटाइआ।

आपणा रंग वटावण आया, पारब्रह्म बेअन्ता। गुरमुख साजन साचे सन्तां मेल मिलावण आया, देवे नाम सच सुगाता। काया चोली रंग चढ़ावण आया, वड दाता गुणी गुणंता। सृष्ट सबाई एका मार्ग लावण आया, एका जाप जपाए जीव जंता। एका राग सुणावण आया, धुंन अनादी इक्क वजंता। एका चोग चुगावण आया, तृष्ना भुक्ख मिटंता। एका भोग भोगावण आया, आत्म सेजा इक्क सुहंता। एका दरस अमोघ दिखावण आया, नाल रखाए साची

संगता। कर्म विजोग मिटावण आया, बंक दवारे एका मंगता। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साजन साचे लए वर, आप आपणा रंग रगंता।

आपणा रंग रंग करतार, आपणी कल वरताईआ। कलिजुग अन्तम वेख विचार, आपणी बणत बणाईआ। पंज तत्त कर प्यार, हड्ड मास नाड़ी रत्त चोला इक्क बणाईआ। घनकपुरी हरि पावे सार, आप आपणा वेस वटाईआ। मात पिता घर हो उजिआर, पंचम जेठा रुत्त सुहाईआ। साचा मंगल गाए हरि निरँकार, एका धुन सुणाईआ। ब्रह्मा शिव देवत सुर करन विचार, नेत्र नैण रहे उठाईआ। लोकमात होई उजिआर, आदि शक्त रूप वटाईआ। भगती भगत करे प्यार, भगवन्त नाउँ धराईआ। साची शक्ती आप निरँकार, साख्यात वेख वखाईआ। बूंद रक्ती लए अधार, पूरब लहणा वेख वखाईआ। वेला वक्ती कर विचार, आप आपणी रुत्त सुहाईआ। धरनी धरत करे पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। कलिजुग कूड़ा चारों कुण्ट फिरे कुड़िआर, अठ्ठे पहर वाहो दाहीआ। जूठ झूठ करे प्यार, पंजां तत्तां नाल लड़ाईआ। मन मत भरे भंडार, गुरमत सर्ब भुलाईआ। भरमे भुल्ले जीव गवार, जीव आत्म ना कोई वखाईआ। दर दर मंगण बण भिखार, नाम भिच्छया कोई ना झोली पाईआ। पारब्रह्म प्रभ लै अवतार, पुरी घनक भाग लगाईआ। साचे सन्त लए उठाल, आप आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लोकमात वेख वखाईआ।

लोकमात वेखण आया, धुरदरगाही दाता। मानस जन्म जगत धराया, बाल सुहाया पिता माता। शेर सिँघ शेर नाउँ धराया, जन भगतां देवे साचीआ दाता। सन्त मनी सिँघ आप उठाया, मिटे रैण अन्धेरी राता। कलिजुग कूड़ा रहण ना पाया, देवे नाम सच सुगाता। साचा सन्त सेवा लाया, वेखी उत्तम जाता। एका शब्द ज्ञान दृढ़ाया, दूजा अक्खर ना कोई पछाता । आप आपणे मार्ग लाया, एका बूझ बुझाता। कलिजुग तेरा लेख लिखाया, बैठा रहे इक्क इकांता। बाल अवस्था खेल गवाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे जाणे आपणी गाथा।

आपणी गाथा आप जणाई, आपे बूझ बुझाइंदा। आपणे रथ आप चढ़ाई, रथ रथवाही आप अखवाइंदा। सगला संग रिहा निभाई, सगला साथ आप रखवाइंदा। प्रगट होया बेपरवाही, बेऐब परवरदिगार नाउँ धराइंदा। नूरो नूर उजाला नूर अलाही, नूरो नूर समाइंदा। कलमा नबी रसूल वेखे इक्क थां खुदाई, खुदावंद खुद वेस वटाइंदा। लोकमात करे जुदाई, जोधा सूर आप हो जाइंदा। हरिजन साचे करे कुड़माई, एका शब्द मुख लगाइंदा। आत्म अंदर काया मन्दर वज्जदी रहे वधाई, साचा ताल आप वजाइंदा। पंचम सखीआं गाइण चाईं चाईं, एका राग अलाइंदा। वेख वखाए थाउँ थाईं, लेखा कोई रहण ना पाइंदा। आप उठाए फड़ फड़ बाहीं, जगत सुहेला आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा रंग रंगाइंदा।

आप आपणा जामा पा, आपणी बणत बणाईआ। गोद सुहा पिता मां, सीर मुख

रखवाईआ। माता सीर दए तजा, साचे सिख समाईआ। जगत सिँघासण लए विछा, उपर आसण लाईआ। रैण दिवस डेरा ला, अठ्ठे पहर वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई घेरा पा, भरमे भरम भुलाईआ। संझ सवेरा कोई जाणे ना, सच प्रभात ना कोई सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा वेस कराईआ।

वेस कराया हरि अव्वला, एका रंग करतारया। पुरी घनक वस्सया सच महल्ला, हरि साचा डेरा ला रिहा। बेमुख भुलाए कर कर वल छला, कूकर सूकर वेख वखा रिहा। आपे वस्सया निहचल धाम अट्टला, गुरमुख सोए आप उठा रिहा। जगत जगदीश दीपक एका बला, अज्ञान अन्धेर गवा रिहा। आपे होया रिहा झल्ला, जगत हलूणा आप लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत सिँघासण आसण ला रिहा।

जगत सिँघासण हरि बिराजे, पंज तत्त हंढ्ढाया। वेस वटाया देस माझे, माझा भरम भुलाया। लोआं पुरीआं रच्या काजे। ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाया। आपे चढ़या आपणे ताजे, एका असव रिहा दौड़ाया। सन्त सुहेला जुग जुग रक्खण आए लाजे, राम कृष्ना रूप वटाया। सुन्न अगम्मी अनहद बाणी मारे अवाज़े, एका शब्द ताल रखवाया। नाम चढ़ाए सच जहाज़े, एका चप्पू आपणा रखवाया। पकड़ उठाए राजन राजे, शाह सुल्ताना दए हिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द सिँघासण इक्क सुहाया।

शब्द सिँघासण जगत दूर, जगत सिँघासण आप हंढ्ढाया। आपे बणया कलिजुग चोर, दिस किसे ना आया। लुकया रिहा अन्ध घोर, पंज तत्त दिवार बणाया। किसे भेत ना पाया गहर गौर, गहर गम्भीर समाया। मनमुख जीव आपणे नाल रिहा तोर, दिवस रैण संग रखवाया। गुरमुखां देवे एका नाम शब्द साची तूर, राग नाद कन्न सुणाया। सर्ब कला आपे भरपूर, भेव किसे ना पाया। सन्त मनी सिँघ सद हज़ूर, प्रभ आपणी बूझ बुझाया। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, साची जोड़ी जोड़ जुड़ाया। मस्तक लाई चरन धूड़, आत्म ब्रह्म जणाया। चतुर सुघड़ मूर्ख मूड़, जन्म जन्मा लेखे लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी धार कर प्यार विच्च संसार, आपे रिहा वखाया।

सन्त मनी सिँघ उठ्ठया जाग, हरि साचे आप जगाया। काया कुले लग्गा भाग, निर्मल जोत करे रुशनाया। दीपक जोती जगे चिराग, इक्क प्रकाश रखवाया। फड़ फड़ हँस बणाए काग, कागी हँस बणाया। दो जहानां पकड़े वाग, वाली दो जहानां आप अखवाया। आपे धोवणहारा दाग़, अमृत जाम आप प्याया। साची नारी मेला कन्त सुहाग, पुरख अबिनाशी एका पाया। एका मंगल एका राग, एका धुन उपजाया। एका शब्द एका वाज, एका रिहा लगाया। एका करनी एका काज, एका करता आप अखवाया। एका धरनी साजन साज, धरत धवल सुहाया। भाग लगाए देस माझ, पुरी घनक नाउँ धराया। सिँघ शेर शेर दलेर सोया गिआ जाग, जागणहारा आप अखवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंज तत्त देवे वर, काया मन्दर इक्क सुहाया।

पंज तत्त कर प्यारा, आपणा तन सवारया। कपड़ बस्त्र अपर अपारा, तन जोड़ा इक्क छुहा रिहा। जगत घोड़े हो असवारा, आपे आप दौड़ा रिहा। जन भगतां करे ख़बरदारा मनमुखां गूड़ी नींद सवा रिहा। जो जन जननी जणया चल आए दवारा, जन जनका रूप वटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, मन मनका आप फिरा रिहा।

जगत सिँघासण इक्क वणजारा, कलिजुग अन्तम आया। अठ्ठे पहर ख़बरदारा, आपणी सेवा रिहा लगाया। दिवस रैण करे प्यारा, एका धार वखाया। ना कोई जाणे मीत मुरारा, साक सैण ना कोई समझाया। सन्त मनी सिँघ सुत दुलारा, एका बूझ बुझाया। लेखे लग्गे अगम्म अपारा, भेव किसे ना पाया। अन्तम प्रगट होया जोत सरूपी निहकलंक नरायण नर अवतारा, जोती जामा भेख वटाया।

शब्द सिँघासण साचा राज, लोकमात कमाया। जगत सिँघासण आप बराज, भरम भुलेखा पाया। अगम्म अगम्मड़ी मारे वाज, तन चमड़ी वेस वटाया। आप आपणा साजन साज, साचे तत्त समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख आदि निरञ्जण, आदि शक्त रूप वटाया।

आदि पुरख हरि अबिनाशी, परम पुरख सुल्ताना। प्रगट होए घनक पुर वासी, खेले खेल दो जहानां। निरगुण जोत हरि शाहो शबासी, हर घट वेख वखाना। भगत दवारे दासन दासी, सेवक सेव कमाना। पूर कराए दर दर घर घर आसी, जो जन आस रखाया। गेड़ चुकाए दस दस मासी, लक्ख चुरासी फंद कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा तन हंढ्ढाया।

जगत तन जगत हंढ़ा, उल्टी कल वरताईआ। बवंजा साल वंड वंडा, बवंजा देशां करे कुड़माईआ । बवंजा अक्खर धार चला, बावन रूप रघुराईआ। बावण लेखा आप गणा, वाक भविख्त जणाईआ। आदि शक्ती रूप वटा, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। भगतां भगती दए सुहा, भगवन वड वड्डी वडयाईआ। जगत जुगती दए बणा, एका जोग सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण एका धार चलाईआ।

निरगुण रूप हरि निरँकार, आदि अन्त रखाया। जुग जुग लै मात अवतार, जुग जुग वेस वटाया। सतिजुग साचे कर प्यार, परम पुरख उठ धाया। त्रेता तेरा कर्म विचार, राम रामा रूप वटाया । द्वापर तेरी बंने धार, सावल सुंदर मुख रखाया। कलिजुग तेरी कर विचार, ईसा मूसा लए उपाया। नानक गुर कर प्यार, एका मंत्र नाम दृढ़ाया। गोबिन्द गुर वेख विचार, पूत सपूता सेवा लाया। लिखया लेख अपर अपार, ना कोई मेट मिटाया। कलिजुग अन्तम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, जोती जामा वेस वटाया।

साल बवंजा काया तन कर लोकमात प्यारा, अन्तम आपणा भाणा आपे मन्न, करया

पार उतारा। आप आपणा बेड़ा बंन, आपे लाए पार किनारा। आपणी वड्डिआई आपे जाणे धन्न धन्न धन्न, ना कोई लिखे लेख लिखारा । आपणा राग सुणे आपणे कन्न, आपे गावणहारा। आपणी जननी आपे जाया आपणा जन, मात पित ना कोई अधारा। किसे ना दिसे छप्परी छन्न, ना कोई मन्दर मस्जिद गुरूदवारा। जोत सरूप हरि निरँकार निरगुण धार आपे जाणे आपणा जन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा करे आप पसार।

आपणा पसारा आप कराए, आपे मेट मिटाइंदा। लोकमात जन्म धर, पंज तत्त हंढ्ढाइंदा। अन्तम अगनी गिआ सड़, एका हवन वखाइंदा। काया कोट ढठ्ठा किला गढ़, त्रैगुण मूल चुकाइंदा। साचे पौड़े आपे चढ़, सच सिँघासण वेख वखाइंदा। ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई बणत बणाइंदा। आपणे अंदर आपे बैठा वड़, पुरख अबिनाशी पुरख मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत सिँघासण साल बवंजा, लोकमात हंढ्ढाइंदा।

जगत सिँघासण कलिजुग धार, साचे चरना हेठ दबाईआ। जीवां जंतां करे खुआर, गुरमुखां दए वडयाईआ। मूर्ख मुगध लाए पार, जो जन रसना रहे गाईआ। एका दूजा भेव निवार, एका दूजा भेव गवाईआ। जोती जामा भेख न्यार, दिस किसे ना आईआ। शब्द डंका अपर अपार, हरि निरँकार आपणा रिहा वजाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, लेखा गिआ लिखाईआ। प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतार, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा आपे जाणे लंमा चौड़ा ना जाणे कोई घर बार, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। मिठा कौड़ा ना करे विचार, आत्म ब्रह्म ना कोई जणाईआ। धुरदरगाही आया दौड़ा बेऐब परवरदिगार, जोती नूर करे रुशनाईआ। सृष्ट सबाई सांझा यार, चार वरनां इक्क पढ़ाईआ। एका अक्खर दए विचार, धुरदरगाही साचा माहीआ। बजर कपाटी पाड़े पत्थर, दूई द्वैती परे हटाईआ। पंच विकारा होए सत्थर, गूड़ी नींद सवाईआ। सन्त सुहेले करे वक्खर, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग जुग आपणी धार चलाईआ।

जुग जुग भेख करनेहारा, आपणी कल वरताइंदा। चारे वेदां पावे सारा, पुरान अठारां फोल फोलाइंदा । खाणी बाणी अंदर बाहरा, गुप्त ज़ाहरा आप अखवाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर दए हुलारा, लोआं पुरीआं फेरा पाइंदा। रव सस करे निमस्कारा, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। गगन गगनंतर अद्धविचकारा, तारा मण्डल आप अखवाइंदा। अगम्म अगम्मड़ा दस्से अगम्मड़ी धारा, अगम्मड़ी धार आप चलाइंदा। अलख निरञ्जण लेख लिख ना सके कोई जीव जंत विचारा, भेव अभेदा भेव कोई ना पाइंदा। आपे जाणे आपणी कारा, अछल अछेदा आप अखवाइंदा। कलिजुग अन्तम लै अवतारा, निहकलंका नाउँ रखवाइंदा। शब्द खण्डा तेज़ कटारा, दो धारा आप चलाइंदा। नौं खण्ड पृथ्मी करे ख़बरदारा, राज राजानां आप उठाइंदा। सम्मत पंदरां इक्क विचारा, वीह सद बिक्रमी नाल रलाइंदा। पंचम जेठ दिन दिहाढ़ा, खुशीआं नाल रलाइंदा। जगत सिँघासण हरि अखाड़ा, दह दिशा फोल

फोलाइंदा। पंज तत्त तजाया पंज तत्त मगर लगाई धाड़ा, अगनी धार वहाइंदा। लग्गे अग्ग बहत्तर नाड़ा, लक्ख चुरासी जीव कुरलाइंदा। लेख लिखाए सतारां हाढ़ा, वाली हिंद उठाइंदा। साध सन्त पकड़ उठाए जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूंघे कंदर उच्चे टिल्ले परबत फोल फोलाइंदा। त्रैगुण माया तेरा तत्त अगनी साड़ा, आपणा मूल चुकाइंदा। सुत शब्द साचा लाड़ा, पारब्रह्म प्रभ आप मिटाइंदा। सोहँ शब्द सीस बंने दस्तारा, सच्चा नाम तिलक लगाइंदा। चार वरनां करे इक्क प्यारा, ऊँचां नीचां मेट मिटाइंदा। लोकमात वखाए इक्क दवारा, वरन गोत ना कोई मिटाइंदा। नूर अलाही पावे सारा, ऐनलहक़ जगाइंदा। मुकामे हक़ खुदी खुदाई ना कोई लाए नाअरा, ना कोई दूजा भेव रखाइंदा। एका एक हरि करतारा, एका रूप दरसाइंदा। अल्ला राणी तेरा नाअरा, हू हू आप वखाइंदा। तूं तूं होए पार किनारा, पारब्रह्म प्रभ आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वार, पंचम जेठा एका दिवस सुहाइंदा।

पंचम जेठ हरि वड्डिआई, पारब्रह्म जणाईआ। लक्ख चुरासी करे कुड़माई, लाड़ी मौत करे कुड़माईआ। एका मैहन्दी हत्थीं लाई, लाल चूड़ा तन पहनाईआ। हाढ़ सतारा वेखे चाईं चाईं, लहन्दी दिशा फेरी पाईआ। उम्मत नबी रसूल उठाए थाउँ थाईं, सोया कोई रहण ना पाईआ। अञ्जील कुरान दर दवारा अग्गे हो हो कहन्दी, अमाम मैहन्दी जोत जगाईआ। लोकमात भाणा एका सहन्दी, भुल्ली सर्ब लोकाईआ। अन्तम वेले एका गाहे गैहन्दी, ना दीसे कोई सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठ दिशा लहिंदी मुख भवाईआ।

लहन्दी दिशा नेत्र खोलू, हरि आपणा कर्म कमाया। मुहम्मद तेरा कीता कौल, पूरा रिहा कराया। सदी चौधवीं वजा ढोल, इक्क नगार वजाया। ना कोई जाणे पंडत पांधा रोल, मुलां शेख़ भेव ना राया। प्रगट होया हरि कला सोल, जोती जामा भेख वटाया। चरन धरे उपर धौल, धरत मात खुशी मनाया। चरन धूढ़ी मुख लगाए साची पौहल, सांतक सति कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सोलां कलीआं शब्द सिँघासण वलीआ छलीआ पुरख अबिनाश वेखे खेल जगत तमाश, चारों कुण्ट उठ उठ धाया।

दह दिशा काली रैण, चारों कुण्ट रैण अन्धेरी छाया। दिशा लहन्दी वेखे लाड़ी मौत डैण, तन शंगार कराया। नाता तोड़े भाई भैण, साक सज्जण सैण इक्क प्यार रखाया। लुकया कोई ना देवे रहण, पीर फकीर शाह हकीर दस्तगीर कुतब गौंस ना कोई सहाया। किसे हत्थ ना आए नीर, बस्त्र चीर ना कोई हंढ़ाया। चिट्टे उपर खिची जाए लकीर, कोई ना मेटे मेट मिटाया। उम्मत नबी रसूल तेरी कोई ना बंने धीर, तीर निराला इक्क चलाया। वीह सद उनी होए अख़ीर, रोज़ा बांग ना कोई रखाया। हक़ हकीकत वेखे फेर, बगल कुरान ना कोई उठाया। शरअ शरीअत साचे लोइण, जगत मसला दए चुकाया। सच सिँघासण कोई ना सोइण, पुरख अबिनाशी आपणा आसण दए उठाया। जो उपजे सो होए विनासन,

थिर कोई रहण ना पाया। ना कोई दीसे मदिरा मासन, घनक पुर वासन डंक वजाया। प्रगट होए शाहो शबासन, राज राजाना दए उठाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा रंग हरि करतार, सृष्ट सबाई वेख विचार, आपणे आप उपाया।

आपणा रंग हरि उपा, आपणी रचन रचाईआ। आपणी जोती आप जगा, आपे करे रुशनाईआ। आपणी गोती आप बणा, आपे नाउँ धराईआ। कोटी कोट रहे धिआ, गुरमुख सन्त सुहेले विरले बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नाउँ धराईआ।

एका नाउँ शब्द जैकारा, चार कुण्ट कराया। देस परदेसा पावे सारा, नौं सति वेख वखाया। लोआं पुरीआं दए हुलारा, एका रंग रंगाया। आपे वस्सया सभ तों बाहरा, संगला संग आप निभाया। नाम मरदंग अपर अपारा, हरि हरि रिहा वजाया। सच दवारे आपे लँघ सच वणजारा, साचा वणज रिहा कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण करे रुशनाया।

निरगुण नूर जोत अकाला, आदि अन्त अखवाया। प्रगट होए दीन दयाला, दया निध समाया। सन्त सुहेला सदा रखवाला, आदि जुगादी फेरा पाया। नेड़ ना आए काल महांकाला, सच दवारा दए सुहाया। काया मन्दर वखाए सची धर्मसाला, प्रभ अबिनाशी डेरा लाया। तोड़नहारा जगत जंजाला, माया ममता मोह चुकाया। चार वरनां एका दस्से शब्द सुखाला, सो पुरख निरञ्जण आप अलाया। हउमे हंगता करे कराए जगत मुख काला, साची संगता मेल मिलाया। भुक्खा नंगता शाह कंगाला, एका रंग रंगाया। एका जोती हरि ज्वाला, एका नूर सवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, जगत सिँघासण वक्त चुकाया।

जगत सिँघासण आप उठाया, आपणी कल वरतारीआ। औदां जांदा नज़र ना आया, वेखे सर्ब संसारीआ। साचा हिस्सा इक्क वंडाया, पवण पवणी दए हुलारीआ। दह दिशा फेरा एका पाया, करे आपणी कारीआ। सन्त मनी सिँघ तेरा लेखा पूर वखाया, बवंजा चौदां जोड़ करारीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भार आप उठा रिहा।

आपणा भार आप उठाए, दो जहानां वाली। सन्त सुहेले संग रखाए, चले चाल निराली। आपणा तिलक आपणा सीस धराए, गुरमुख करे रखवाली। आपणी चाली आपे पाए, दो हत्थां दिसे खाली। आपणा पाली आप हो जाए, ना कोई संग रखाए लेफ निहाली। चौदां लोक चौदां हट्ट चौदां तबकां पार कराए, इक्क मुहम्मद मंगे विच्च दलाली। तीर्थ तट्ट वेख वखाए, किसे पत्त ना दिसे ना डाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपे चले चाल निराली।

शब्द सिँघासण हरि उपा, जगत सिँघासण मात तजाया । शब्द सिँघासण जोत जगा, जगत सिँघासण दए बुझाया। शब्द सिँघासण रंग रंगा, जगत सिँघासण दए मिटाया। शब्द सिँघासण मरदंग वजा, भगत सिँघासण सुन कराया। शब्द सिँघासण अंग लगा, भगत सिँघासण मूल ना भाया। आपणा भाणा आप वरता, आपणे भाणे विच्च समाया। पंचम जेठी जामा पा, पंचम रुत्त सुहाया। पंचम जेठ जोत जगा, पंचम लए उपाया। वरन गोत मेट मिटा, एका सरन धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जगत पूजा दए मिटाया।

जगत पूजा मिटे भेव, हरि साचे आप मिटावणा। लेखा जाणे चारे वेद, ना भेव किसे छुपावणा। आपे जाणे जगत कतेब, वेद व्यास संग रखावना। अञ्जील कुरान ना करे फरेब, ईसा मूसा आप जगावणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठा पंचम मीता पंचम मोह चुकावणा।

पंचम नाता जगत तोड़, एका घर सुहाइंदा। शब्द चढ़ाए साचे घोड़, साचा दर दिखाइंदा। धुरदरगाही आया दौड़, दाता दानी आप अखवाइंदा। दो जहानी लाए एका पौड़, डूंघी भवरी पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, सम्मत पंदरां वेख वखाइंदा।

सम्मत पंदरां हरि ललकारा, चार कुण्ट उठ धाया। ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नीर वहाया। शिव शंकर वेखे इक्क दवारा, हत्थ त्रिशूल उठाया। करोड़ तेतीसा कढ़ु हाढ़ा, वेला अन्तम आया। नौं खण्ड पृथ्मी मारे धाड़ा, नौं दर फोल फोलाया। सत्तां दीपां इक्क अखाड़ा, प्रभ साचा रिहा बणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सम्मत पंदरां तेरी पाए वंड, वेख वखाणे हरि ब्रह्मण्ड, लक्ख चुरासी जेरज खाणी उत्भुज सेतज अंड वंड वंडाईआ।

पंचम जेठा शब्द खण्डा दो धारा, मनमुखां कंड वढाईआ। मगर लग्गे अगम्मी धाड़ा, प्रभ हत्थ चंड परचंड उठाईआ। प्रगट होया साचा लाड़ा, भेख पखण्ड दए मिटाईआ। इक्क इकल्ला एकँकारा, दोहागण नार रंड सर्ब वखाईआ। ना कोई सोए पैर पसारा, जन भगतां एका वंड वंडाईआ। रसना हरि हरि नाउँ उच्चारा, बेमुख बैठे कन्ड वढाईआ। अग्गे डिगे मूहे दे भारा, सिर बांहीआ हेठ उठाईआ। दुःख लग्गा अन्तम भारा, काम क्रोध लोभ मोह हलकाईआ। पंज तत्त चल्लया मात विकारा, मात जगत परनाईआ। ना कीआ सच वपारा, जूठ झूठ होई कुड़माईआ। कलिजुग माया कन्त भतारा, रैण अन्धेरा एका छाईआ। दीपक होए ना कोई उजिआरा, ना कोई साचा मार्ग लाईआ। ना कोई दीसे पार किनारा, भरम भरमी रहे भुलाईआ। भरम भरमे गढ़ हँकारा, एका दूजा देवे ना कोई मिटाईआ। तीजे नेत्र ना दरस दिखाए हरि निरँकारा, चौथे घर ना कोई समाईआ। चौथा पद ना दए सहारा, पंचम मेला ना कोई मलाईआ। मिले मेल ना गुर अवतारा, छेवां घर ना कोई सहाईआ। उपजे शब्द सची धुनकारा, सत्तवें सति पुरख निरञ्जण ना मेल मिलाईआ। एका वेखे धुर

दरबारा, थिर घर थाउँ ना कोई बहाईआ। निरगुण निरगुण ना रंग करतारा, प्रभ आपणी रचन रचाईआ। कलिजुग अन्तम लै अवतारा, शब्द डंका रिहा वजाईआ। खेले खेल अपर अपारा, घर साचे वज्जदी रहे वधाईआ। मिल्या मेल मीत मुरारा, आत्म सेजा आए चाईं चाईंआ। कन्त कन्तूहला हरि भतारा, आपे फड़े उठ उठ बांहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण जोती वेस कर, मिल्या दर इक्क दवारा।

एका मिल्या हरि दरवाज़ा, एका घर सुहाईआ। एका हरि ग़रीब निवाज़ा, एका दर वखाइंदा। एका रक्खे असव ताजा, एका आप दौड़ाइंदा। एका एक फिरे भाजा, वेस अनेका आप कराइंदा। प्रगट होए देस माझा, पुरी घनक धाम सुहाइंदा। भगत जनां जन मारे वाजां, अंदर मन्दर खोज खुजाइंदा। लोकमात रच्या काजा, कलिजुग अन्तम फेरी पाइंदा। इक्क चलाए सच जहाजा, सोहँ नाउँ धराइंदा। दुरमत मैल धोवे दागा, निर्मल नीर प्याइंदा। शब्द जणाई बोध अगाधा, धुन आत्मक आप सुणाइंदा। रसना जिह्वा जिस जन अराधा, हरि गुण वेख वखाइंदा। मेल मिलावे मोहण माधव माधा, विछड़ कदे ना जाइंदा। सन्त सुहेला साधन साधा, सिदक सबूरी इक्क रखाइंदा। पंचम वजाए साचा नादा, अनहद ताल वजाइंदा। अनहद वजाए साचा वाजा, राग रागनी सच कमाइंदा। वेख वखाए दो दो आबा, आब हयात आप प्याइंदा। भाग लगाए मक्का काया साचा काअबा, साचा हज्ज कराइंदा। सुरत सवाणी देवे दाजा, साचा सगन मनाइंदा। शब्द मिलावा धुरदरगाही साचा दाअवा, शाहो भूप वड राजन राजा, आप आपणा संग रखाइंदा।

आपणा संग हरि रखंदड़ा, ना कोई तोड़ तुड़ाए। बजर कपाटी तोड़े जंदड़ा, जो बैठा आप लगाए। दूई द्वैती ढाहे कंधड़ा, भाण्डा भरम भन्नाए। आपे होए सदा बख़शिंदड़ा, बख्शणहार हरि हरि राए। मनमुख जीव माया अन्धड़ा, भेव ना जाणे राए। मदिरा मासी गंदड़ा, नौं दर फिरे हलकाए। गुरमुख विरला आत्म धुन सुणे सुणाए सुहागी राग छन्दड़ा, सतिगुर पूरा आपे गाए। जोती जोत प्रकाश आप रखदंड़ा, अज्ञान अन्धेर मिटाए। इक्क वखाए दया कमाए परमानंदड़ा, परमानंद समाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, पंचम जेठा हरि भगवाना, जोत सरूपी पहरे बाना, जीवां जंतां देवे माणा, साधां सन्तां देवे दाना, एका रंग रंगाए।

एका रंगण रंग रंगाए, रंगणहार करतारा। दूसर दर ना मंगण जाए, भरया रहे भंडारा। जुगा जुगन्तर फेरी पाए, आदिन अन्ता एकँकारा। साधां सन्तां लए जगाए, देवे नाम अधारा। मनमुख दर तों दए दुरकाए, भेव ना पाइण गुर करतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, जगत सिँघासण पुरख अबिनाशन खेल कराए दया कमाए पार किनारा।

पार किनारा आप कराए, एका एक वखाया। इक्क किनारा एका तट्ट, एका दर सुहाया। एका वस्सया घट घट, एका रूप समाया। एका खेल बाज़ीगर नट, नट नटूआं सांग वरताया।

एका वेखे साचा हट्ट, चौदां लोकां फोल फोलाया। शब्द वरोले साचा पट, तन्दन नाम बंधाया। हरिजन जन हरि साचे वेख वखाए काया मट, साचा मन्दर सुहाया। पंज तत्त तन जन जाणा ढठ्ठ, थिर कोई रहण ना पाया। कलिजुग तपाया एका मट्ठ, जुग चौथा खेल वखाया। सम्मत सोलां करे अकट्ठ, हरि साचा शब्द जणाया। किसे ना मुकणा पैंडा नट्ठ नट्ठ, चारों कुण्ट वाहो दाहिआ। राज राजाना शाह सुल्तानां कोई ना रक्खे हठ, ना कोई धीर धराया। पंचम जेठ करे चठ, तीर निशाना एक लाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सर्ब कल आपे समरथ, समरथ पुरख अखवाया।

सर्ब कला आपे समराथा, हरि वड वड्डी वडयाईआ। प्रगट हो त्रिलोकी नाथा, आपणी रचन रचाईआ। एका शब्द एका गाथा, एका करे पढ़ाईआ। एका जोती एका नूर हाज़र हज़ूर कौसतक मनीआ मस्तक टिक्का लाए माथा, एका जोत करे रुशनाईआ। प्रगट होए जिउँ रामा घर दसरथा, लंका गढ़ तुड़ाईआ। आपे वेखण जाए तमाशा, पंदरां कत्तक रुत्त सुहाईआ। शाह भबीखन होए उदासा, इन्दर परशाद आप उठाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी खाली कासा, घर घर बैठे करन सलाहीआ । लक्ख चुरासी हारी बैठी पासा, धर्म धीर ना कोई धराईआ। मुख लगाया मदिरा मासा, ईसा मूसा पैहले मिटाईआ। चीना रूसा वेख खुलासा, प्रभ साचा आप खुल्हाईआ। लाड़ी मौत करे हासा, उठ उठ वेखे चाईं चाईंआ। केहड़ी कूटे पैहले जासा, राए धर्म लड़ फड़ाईआ। राए धर्म दए भरवासा, फड़ाए आपणी बाहींआ। जगत अधार कीआं वेले अन्त ना छुटे तोला मासा, अठाई कुण्डां दए भराईआ। प्रगट होया हरि शाहो शाबाशा, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। बवंजा साल रक्खया घनक पुर वासा, जगत सिँघासण सेज विछाईआ। वीह सौ बिक्रमी अन्त विनासा, पंज तत्त तन देह तजाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाशा, गुरमुख साचे विच्च गिआ समाईआ। आपे होया दासी दासा, सेवक सेवा रिहा कमाईआ। वेख वखाणे पृथ्मी आकाशा, गगन पताला फेरा पाईआ। साचे मण्डल पावे साची रासा, गोपीआं काहन आप नचाईआ। आपणी कुदरत आपे बल बल जासा, आपे वेख वखाईआ। आपणी सुरती दए आप दलासा, लक्ख चुरासी विच्च टिकाईआ। कलिजुग बख्शे चरन कँवल इक्क भरवासा, दो जहानां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान नाउँ धराईआ।

नाउँ धराए हरि निरँकार, निहचल धाम सुहाया। निहचल धाम अपर अपार, दीपक जोती इक्क जगाया। अठ्ठे पहर होए उजिआर, दिवस रैण ना कोई बणाया। ना कोई मन्दर चार दिवार, छप्पर छन्न ना कोई सुहाया। इक्क इकल्ला इक्क एकँकार, बैठा डेरा लाया। जुग जुग लोकमात लै अवतार, सनक सनंदन नाम धराया। सन्त कुमारा एका रूप वटाया। बराह तेरा रूप अपार, आपणा वेस कराया। यगय पुरुष तेरी सति सति धार, सति सति वरताया। हाव गरीव कर दातार, ब्रह्मे माण दवाया। नर नरायण कर विचार, बदरी नरायण वेख वखाया। कपल मुन दता त्रे बन्ने धार, यदू बंसी इक्क धराया। रिखभ देव पावे सार, उजैनी रूप वटाया। प्रिथू तेरी इक्क विचार, धरत मात रिड़क वखाया।

कछ वेखे इक्क संसार, मुख मछ वटाया। धनंतर वैद वड धुनकार, सृष्ट सबाई रिहा सुणाया। मोहण रूप कर अपर अपार, महांदेव भुलाया। करोड़ तेतीसा वेख विचार, सुर असुर लेखे लाया। बावन भेखा इक्क अपार, बल दवारे मंगण आया। हँसा रूप वेख विचार, शब्दी शब्द उपाया। नर सिँघ ना तत्त कोई प्यार, बालक लेखे लाया। हरी हरि हरि अपर अपार, गज तन्दन तोड़ तुड़ाया। नारद मुन तेरी सुण पुकार, नर नरायण उठ उठ धाया। बालक धरू दए प्यार, साचे धाम बहाया। सतिजुग तेरा पार किनार, त्रेता वेस वटाया। परसराम रूप अपार, आपणी बणत बणाया। कौरू कुशेतर धाम न्यार, पिता सीस कटाया। जगत जगदीस पावे सार, आत्म तत्त जणाया। आत्म तत्त कर विचार, कुशत्री वेख वखाया। राम रामा लै अवतार, घर साचे भाग लगाया। लंका गढ़ दए हुलार, रावण रावण विच्च समाया। एका दूजा कर किनार, शाह भबीखन लए तराया। शाह भबीखन रोवे ज़ारो ज़ार, अन्तम नीर वहाया। राज ताज ना मोहे प्यार, तोहे चरन प्रीत इक्क रखाया। रघुपत बोले मुखों उच्चार, वेला वक्त अजे ना आया। कलिजुग वरते विच्च संसार, तेरा लेखा दए चुकाया। मातलोक औणा जन्म धार, भारत खण्ड भाग लगाया। पावे वंड गुर करतार, ना कोई मेटे मेट मिटाया। निरगुण करे इक्क प्यार, तेरा मेरा रूप वटाया। मरे ना जन्मे विच्च संसार, आवण जावण खेल रचाया। जगत भबीखन कर विचार, एका तिलक लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, त्रेता तेरा रूप वटाया।

त्रेता बेड़ा होया दूर, हरि साचे कल वरताईआ। द्वापर आए हाज़र हज़ूर, आपणा भेख वटाईआ। वेद व्यासा ना काया तन तप्पया तन्दूर, ना रोग सोग जणाईआ। एका नाद एका तूर, एका शब्द जणाईआ । नारद मुन करे भरपूर, चार सलोक जणाईआ । बारा अक्खर हाज़र हज़ूर, निशअक्खर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी बूझ आपणे अंदर आपे आप टिकाईआ।

आप आपणा भेव खुल्ला, आपणा राग सुणाया। नारद मुन संग रला, साचा मार्ग लाया। चारे वेदां हिस्से दए वंडा, लेखा लेख आप कराया। पुरान अठारां दए लिखवा, लक्ख चार हज़ार सतारां सलोक गिणाया। आपणी करनी आप कमा, आपणा भेख वटाया। सावल सुंदर रूप वटा, मोर मुक्ट कँवल नैण आप हो आया। अरजन मीता साचा सज्जण आप अखवा, एका गीता ज्ञान दृढ़ाया। दुष्ट हँकारी रहण ना पाइण, बन काहना कंसा मेट मिटाया। सहँस सहँसा सरबंस सरबंसा खाए लाड़ी मौत डाइन, आप आपणा हुक्म चलाया। सन्त भगत जटा जूट एका धाम अकट्ठे रहण, विछड़ कदे ना जाया। बिप्पर सुदामे चुकाए लहण देण, दरोपद लज्जया पड़दा पाया। हरि हरि भेव कोई ना सके रसना कहण, ना कोई लेखा लेख लिखाया। कलिजुग वेखे काली रैण, आपणा रंग रंगाया। ज्ञान बोधा बोध वखाए एका नैण, एका धार वहाया। पुरख अबिनाशी घट घट वासी आपणा भाणा आपे वेखे आपणे नैण, ना कोई दूसर संग रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वार, आपणी धार वहाईआ।

ईसा मूसा कर प्यारा, आपणी कल वरताईआ। इक्क अथरबण कर प्यारा, ऐड़ा अथरबण इक्क वडयाईआ। अल्ला राणी नूर उजिआरा, नूर अलाही रिहा कराईआ। संग मुहम्मद चार यारा, चार यारी इक्क दिखाईआ। अल्ला राणी कर प्यारा, आपे रिहा परनाईआ। एका देवे जगत प्यारा, जूठ झूठ करे कुड़माईआ। वेले अन्तम दए हुलारा, आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, आपे लेखा लिखणहारा आपे मेटे छाहीआ।

आपे लेख लिखावण आया, आपे लिखणहारा। आपे भेख वटावण आया, खेले खेल न्यारा। आपे दर दरवेशी नाम धरावण आया, मंगे भगत दवारा आपे ब्रह्मा विष्न महेश गणेश राह तकावण आया, आपे भरे भंडारा। आपे खूंडी मोढ़ु भूरी उठावन आया, नानक नाउँ धराया। आपे दर दवारा मंगण आया, ढह ढह पए चरन दवारा। नाम सति कर उजिआरा, लोकमात रिहा जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक गुर मिल्या धुर धुर संजोग मिलाया।

मिल्या धुर संजोग, हरि भगवानया। जीवां जन्तां कट्टे रोग, देवे नाम निशानया। धुरदरगाही देवे साचा जोग, हरि दाता वड मेहरबानया। दरस दिखाए इक्क अमोघ, आप आपणा रूप वटानया। इक्क सुणाए साचा जोग, सोहँ सो साची बाणीआ। सृष्ट सबाई कलिजुग अन्तम होए विजोग, चारों कुण्ट रोए जेरज खाणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द जणाई आप जणाए, धुरदरगाही बैठा बेपरवाही धुन अनादी सुन समाधी अनहद साची बाणीआ।

अनहद बाणी आप वखाणी, रसना हरि हरि गाईआ । परा पसन्ती पुणी छाणी, पारब्रह्म वड्डी वडयाईआ। मद्धम बैखरी होए निताणी, जीवां जंतां रही समझाईआ। आत्म अन्तर एका पाणी, अमृत आत्म रही प्याईआ। पौणा पद इक्क निरबानी, परम पुरख मिलाईआ। गुर शब्द मिले साचा हाणी, साची सेज सुहाईआ । आवण जावण चुक्के काणी, राए धर्म ना दए सजाईआ। चरन कँवल इक्क ध्यानी, नाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नानक दित्ता एका वर, निर्मल जोती आत्म घर, दिवस रैण अठ्ठे पहर रहे रुशनाईआ।

नानक नाम सति वरताया। चार कुण्ट उठ धाया। दह दिशा जीव जंतां समझाया। एका मार्ग लाया। साध सन्त एका हुक्म जणाया। एका अक्खर वेख वखाया। पूरन भगवन्त जोत करे रुशनाया। कलिजुग वेला दए सुहाया। आप आपणा नाउँ धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका जोत ना कोई वरन ना कोई गोत, एका दूजा भउ चुकाया।

तीजा लोइण खोल्ल वखाया। चौथा घर इक्क सुहाया। पंचम मेला सहज सबाया।

छेवां छप्पर छन्न तजाया। सत्तवें जोत प्रकाश समाया। अठवें अठां तत्तां विच्च ना आया। नौवें नौं दर फेरा ना पाया। दसवें बैठा आसण लाया। गुरमुख विरले दर्शन पाया, जिस जन आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दसवें गुर लेखा धुर शब्दी सुत उपाया।

शब्दी सुत गुर गोबिन्द, गोबिन्द रूप समाया। आपे मेटणहारा सगली चिन्द, चिन्ता रोग विच्च ना आया। आपे बख्शे गुणी गहिंद, दाता दानी आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा लेखा आपे जाणे, भरम भुलेखा वेख वखाणे, धारी केसा मूंड मुडाया भेव ना राया।

गुर गोबिन्द बण लिखारा, आपणा लेख लिखाइंदा। कलिजुग अन्तम प्रगट होए निहकलंक नरायण नर अवतारा, नर नरायण जोत जगाइंदा। चार वरनां करे इक्क प्यारा, वरन गोत मेट मिटाइंदा । हिंदू मुसलम सिख ईसाई सोहण इक्क दवारा, बीस बीसा राह तकाइंदा। राज राजानां शाह सुल्तानां ऊँचां नीचां भरे नाम भंडारा, आपणी वस्त आप वरताइंदा । सम्मत सोलां कर खुआरा, मनमुख जीआं आप उठाइंदा। सम्मत सतारां मारे मारा, ना कोई धीर धराइंदा। अठ्ठ अठारां वैहन्दी धारा, जल जल आप समाइंदा। उन्नी उन्नीसा पार किनारा, ईसा मूसा आप कुरलाइंदा। बीस बीसा नर अवतारा, छत्तर सीस आप झुलाइंदा। खेले खेल दिल्ली दरबारा, सच सिँघासण इक्क विछाइंदा। नौं खण्ड पृथ्मी बंने साची धारा, इक्क ज्ञान दृढ़ांइंदा। सतिजुग सोहे तेरा धर्म जैकारा, दह दिशा आप लगाइंदा । भगत वछल आप गिरधारा, गिरवर रूप वटाइंदा। कलिजुग तेरा पार किनारा, लोकमात पार कराइंदा। सतिजुग साचा लै अवतारा, धरत मात गोद सुहाइंदा। भगत जनां करे प्यारा, एका कर्म कमाइंदा। एका भरे नाम भंडारा, बरन अठारां वेख वखाइंदा। तरनी तरन सची सरकारा, साची धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पंचम जेठा गुरमुखां रक्खे साया हेठा, नाम छत्तर सीस झुलाइंदा।

पंचम जेठा जगत सिँघासण, हरि साचे मूल चुकाया। पार किनारा पृथ्मी अकाशन, आपणा आप वखाया। आप उठाए शाहो भूप हरि शाह शबाशन, शाहां शाह हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पंचम जेठा दित्ता वर, हरि संगत मेल मिलाया ।

संगत मेला हरि हरि नाता, सतिगुर पुरख जुड़ाया। मिले मेल हरि पुरख बिधाता, पारब्रह्म सरनाया। उत्तम होए सतिजुग ज़ाता, वरन गोत ना कोई रखाया। अकाल पुरख होए साचा पिता आदि शक्त होए साची माता, गुरमुख साचे गोद उठाया। घर चौथे देवे सोहँ दाता, साचा नाम जपाया। इक्क चलाए साचा राथा, रथ रथवाही बणके आया। आपे होए त्रिलोकी नाथा, त्रैभवण समीप समाया। आपे जाणे पूजा पाठा, हवण अहूती आप कराया। आपे अमृत सर सरोवर मारे ठाठा, आपे ताल भराया । आपे चारे कुण्ट दह दिशा लोआं पुरीआं गगन पतालां फिरे नाठा, चारों कुण्ट फेरा पाया। आपे जाणे आपणी

वाटा, आपे पन्ध मुकाया। आपे चढ़े आपणे घाटा, आपे राह वखाया। आपे जोती नूर उपाए एका लाटा, आपे अगनी तत्त जलाया। आपे आपणा रस आपणे अंदर आपे चाटा, रसना जिह्वा ना कोई हिलाया। आपणा लाहा आपे खाटा, दिस किसे ना आया। आपे आपणा जुग जुग पूर कराए घाटा, सन्त सुहेले संग रलाया। लेखा लिखे मस्तक जोती नूर लिलाटा, लहणा देणा मूल चुकाया। आप खुल्लाए साचा हाटा, आपे हट्टो हट्ट विकाया। गुर संगत तेरा साचा नाता, हरि साचे आप बंधाया। कलिजुग रैण अन्धेरी राता, चारों कुण्ट अन्धेरा छाया। मनमुख नार होई कमज़ाता, मनमुख जीवां लए परनाया। वेले अन्त ना पुच्छे कोई वाता, राए धर्म दए सजाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, हरि संगत माण दवाया।

हरि संगत हरि साचा माण, एका दर दवारया। इक्क जणाई धुर फ़रमाण, आपणी आप जणा रिहा। साचा ढोला सारे गाण, काया मन्दर आप वसा लिआ। आपणा गुर आपे पाण, आपे घर छुपा लिआ। आपणा पड़दा आपे लाहण, मुख घुंघट ना कोई रखा लिआ। दूई द्वैती पड़दा पड़ाइण, बजर कपाटी किला तुड़ा लिआ। अनहद सुणे साचा गाण, पंचम सेवा ला लिआ। दसम दवारी सच मकान, प्रभ साचे आप बणा लिआ। नेड़ ना आइण पंज शैतान, ना कोई मोह वखा लिआ। गुरमुख विरले लोकमात पाइण, जिस जन चरन ध्यान लगा लिआ। आत्म अमृत अन्तर देवे पीण खाण, तृसना भुक्ख मिटा लिआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पंचम जेठा गुण निधाना, हरि संगत करे दर परवाना, एका देवे नाम निशाना, ना दूसर कोई वेख वखा लिआ।

शब्द गुर सर्ब देवा, देव देवा अखवाया। पारब्रह्म प्रभ अलख अभेवा, भेव किसे ना पाया। जन भगतां देवे अमृत आत्म साचा मेवा, एका फल खुआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जग मेला आप मिलाया।

मेला मेलणहार बनवारी, निर्मल नूर नुराना। भगत वछल शब्द गिरधारी, देवे राग तराना। दर दवारे बैठा पैज जाए सवारी, वेख वखाए गुणी निधाना। हरि संगत हरि लगे प्यारी, बिरध बाल ना जाणे हरि नौजवाना। एका रंग रंगे करतारी, लोकमात उतर ना जाणा। जो जन ढह पिआ दवारी, दो जहानी पार कराणा । तोड़ विछोड़ा आपणी करे कारी, हरि का भेव किसे ना जाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि संगत वखाए एका घर ना कोई दूसर महल्ल अटारी।

एका हरि एका दर, एका घर सुहाया । एका देवणहारा वर, एका झोली नाम भराया। एका चुकाए जगत डर, धर्म राए ना दए सजाया। एका खेल रिहा कर, करनहार आप हो जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका इकी साची सिक्खी साची धार बंधाया।

एका इक्की कर अकार, आपणा रूप दरसाइंदा। निरगुण रूप वस घर बार, वेद कतेब ना कोई जणाइंदा। नौ दवार विच्च संसार, पंज तत्त सुहाइंदा। दसवां महल्ल इक्क उसार, काया मन्दर डेरा लाइंदा। अट्टल महल्ल उच्च मिनार, आप आपणा वेख वखाइंदा। गुरसिख ना लाए कोई किसे सल, ताहना मेहणा ना कोई धराइंदा। पुरख अबिनाशी जिस होया वल, फड़ बांहों पार कराइंदा। जगत बुढ़ेपा फल लगा डालू, अमृत मुख चवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आत्म देवे साचा सुख सुफल कराए मात कुक्ख, मानस मनुख लेखे लाइंदा।

हरिसंगत हरि नाता जोड़, एका मार्ग लाया। किआ कोई करे तोड़ विछोड़, प्रभ साचे आप जुड़ाया। चढ़या रहणा शब्द घोड़, प्रभ साचे आप चढ़ाया। दर दवारा वेखे दौड़ दौड़, दिवस रैण सेव कमाया। पंचां तत्तां मारे पैहला पौड़, पंचम चोर दए मिटाया। गुरमुख आत्म लग्गी औड़, अमृत मेघ दए बरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि संगत देवे एका वर, जगत सिँघासण मूल चुकाया।

जगत सिँघासण गिआ तज, आपणा मोह चुकाया। शब्द सिँघासण चढ़या भज्ज, निरगुण वेस वटाया। जगत सिँघासण पड़दा कज, अगनी तत्त जलाया। शब्द सिँघासण बैठा सज, निहकलंकी जामा पाया। जगत सिँघासण ताल गिआ वॅज, शब्द सिँघासण वेला आया। जो घड़या सो गिआ भज्ज, थिर कोई रहण ना पाया। गुरसिखां सम्मत पंदरां कलिजुग तेरी पार कराए पंचम जेठी हद्द, औखा घाट वेख वखाया। घर घर आप सुणाए अनहद वाजा साचा नाद, नाद अनादी धुन उपजाया। खोज खुजाए हरि ब्रहमादि, पारब्रह्म अखवाया। आपे बैठा विच्च अद्ध, गुरमुख साजण राह तकाया। विष्नूं वंसी वेखे साची यद्द, बंसा बंस सुहाया। गुरमुख वखाए एक पद, चौथा दर सुहाया। शब्द निशाना लए गड्ड, झण्डा धर्म झुलाया। मनमत विकारा बणे डूंघी खड्ड, उपर पड़दा पाया। निर्मल करे तन मास नाड़ी रत्त हड्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि संगत देवे इक्क वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर साचा दया कमाया।

घर सजया शब्द सिँघासण, जग तजया पुरख अबिनाशन, प्रगट होया घनक पुर वासन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि सन्तन देवे एका वर, एका घर शाहो शाबासन।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

४३) गोबिन्द किहा पुरख अकाल दीन दयाल ओस वेले मैं मंगाँ एहो मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। सवा गज़ दी तेरी धार जन भगतां दी आत्म सेज विछा पलँघ, जगत सिँघासण दी लोड़ रहे ना राईआ। उह सदा गावण तूं मेरा मैं तेरा छन्द, खुशी होवे बन्द बन्द, बन्दगी इक्को इक्क दृढ़ाईआ। तेरे नाल जावां हंढु, झगड़ा छड्ड खण्ड ब्रह्मण्ड,

सचखण्ड दवार जावां लँघ, जिथ्थे तेरा नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। (१२ चेत शै सं ४)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

४४) जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी देवे वर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग जाए हर, सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण लक्ख चुरासी विच्चों लए फड़, चरन धूड़ करा के मज़न, काया मन्दर अंदर निझ सिँघासण बहे वड़, दूजा धाम धुर दा राम अगम्मी काहन हकीकी पैग़ाम शब्दी तरान विच्च जहान नौजवान श्री भगवान साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी एकँकार इक्क इकल्ला सच महल्ला सच संदेश सति सति दृढ़ाईआ। (१३ चेत शै सं ४)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

४५) सच सिँघासण डेरा लाए। शब्द स्वासण इक्क चलाए। मात पताल अकाश अकाशण, साची जोत हरि जगाए। गुरमुखां रक्खे निज घर आत्म वासण, बंधन धर्म राए हरि आप कराए। जोती जामा दासी दासन, शब्द बंधन बंध बंधाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सच सिँघासण आसण लाए।

सच सिँघसण हरि असथूल। ना कोई पावा ना कोई चूल। ना कोई चुकाए मात मूल। शब्द सिँघासण हरि जी बैठा, चारे कुण्टां रिहा झूल। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां, साचा मेल मिलाए, हरि कन्त साचा कन्त कन्तूहल। (२६ पोह २०११ बिक्रमी)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

४६) हरि सिँघासण अडोल, विच संसारया। हरि सिँघासण अडोल, ना कोई तोल तुला रिहा। हरि सिँघासण अडोल, ना कोई बणत बणा रिहा। हरि सिँघासण अनमोल, जुगो जुग मात धरा रिहा। हरि सिँघासण अडोल, सतिजुग साचे धरत मात टिका रिहा। हरि सिँघासण अतोल, अठारां भेखी वेखा वेखी लाल धार खेल रचा रिहा। हरि सिँघासण अडोल, ना कोई जाणे जगत डोला, ना कोई बणत बणा रिहा।

हरि सिँघासण जगत अतोला, त्रेते आपणा आप उपा रिहा। हरि सिँघासण सदा अडोला,

दोए दोए लेख लिखवा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, ना कोई मात वखवा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, जुगो जुग जुगन्ती मात बणा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, ना कोई मात वखवा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, शब्द छत्तर हत्थ फड़ा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, ना कोई पहने अस्त्र शस्त्र, चक्कर सुदर्शन उपर टिका रिहा। हरि सिँघासण अतोला, द्वापर वेख वखवा रिहा। हरि सिँघासण अतोला, साची जड़ती आप जड़ा रिहा । हरि सिँघासण अतोला, कलिजुग रक्खे पड़दा उहला, गुर पीरां भेव ना पा लिआ। हरि सिँघासण अतोला, पा सरगुण मात चोला, काया देही ना किसे बणा लिआ। हरि सिँघासण अडोला, धुरदरगाही सच स्नेही, आप आपणे हत्थ रखवा रिहा। आप तजाए काया देही, जोती जामा पा लिआ। जोत निरञ्जण निर विकार, निरगुण सरगुण दोवें लेख लोकमात लिखवा रिहा। जोती जामा धरया भेख, हरि आपणी बणत बणा रिहा। हरि सिँघासण अतोल, कलिजुग तेरे अन्तम वेले बेमुखां पड़दे देवे खोलू, साची बणत बणा रिहा। जोती जामा श्री भगवाना, साची रचन रचा रिहा। हरि सिँघासण अतोल, चार कुण्ट चार चुफेर धरत मात वेख वखाईआ। हरि सिँघासण अतोल, पुरख अबिनाशी साचे भेख, साचे धाम वंड कराईआ। हरि सिँघासण अतोल, गुर गोबिन्दे लिखया लेख, निहकलंक दए उपजाईआ। हरि सिँघासण अतोल, हरि साचा साची गणत गिणाईआ। हरि सिँघासण अतोल, गुरमुख साचे सन्त दुलारे धरत मात तेरी गोद उठाईआ। हरि सिँघासण अतोल, सिँघ मनजीत ना जाए डोल, प्रभ भाणे आप रखवाईआ। हरि सिँघासण अतोल, जगत जगदीशे किहा बोल, तेरी वारी मात अन्तम आईआ। हरि सिँघासण अतोल, प्रभ पाकी पाक नीहां हेठ चणाईआ। हरि सिँघासण अडोल, साचा मन्दर आप सुहाईआ। हरि सिँघासण अडोल, अठां तत्तां बणत बणाईआ। हरि सिँघासण अतोल, नावें दर खोलू वखवाईआ। हरि सिँघासण अतोल, दसवां आपणे हत्थ रखवाईआ। हरि सिँघासण अतोल, नावें उपर पड़दा पाईआ। हरि सिँघासण अतोल, बारां चार लेखा रिहा लिखवाईआ। हरि सिँघासण अतोल, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, बैठ इकांत आपणी बणत बणाईआ। हरि सिँघासण अतोल, मात बणाइंदा। हरि सिँघासण अतोल, चार चार चार चार, चार चुफेर रखवाइंदा। (१ माघ २०११ बि)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

४७) हरि शब्द नाम निशानीआ। हरि शब्द जगत महानया। हरि शब्द हरि सरन मिले दान, वड वड दानीआ। हरि शब्द हरि सरन जगत माण, सच निशान आपणा आप झूलानया। जोती जोत सरूप हरि, भाणा जिस पछाणया।

हरि सिँघासण अडोल, हरि निरंकारया। हरि सिँघासण अडोल, ना किसे उसारया। हरि सिँघासण अडोल, सच महल्ल अपर अपारया। हरि सिँघासण अडोल, ना दिसे कोई चार दवारया। हरि सिँघासण अडोल, पावा चूल ना कोई रखवा रिहा। हरि सिँघासण अडोल, लम्मा चौड़ा ना कोई वखवा रिहा। हरि सिँघासण अडोल, जोती जोत सरूप हरि, आपे आप बणा रिहा।

हरि सिँघासण अडोल, ना किसे जणाईआ। हरि सिँघासण अडोल, ना बाडी कोई बणाईआ। हरि सिँघासण अडोल, ना ढाडी कोई गाईआ। हरि सिँघासण अडोल, छत्ती रागाँ भेव ना राईआ। हरि सिँघासण अडोल, नारद दिस ना आईआ। हरि सिँघासण अडोल, ब्रह्मा वेता सार ना पाईआ। हरि सिँघासण अडोल, शिव शंकर दिस ना आईआ। हरि सिँघासण अडोल, सुरप्त राजा इन्द ना वेखे नैण उठाईआ। हरि सिँघासण अडोल, रव सस कोट वेख ना पाईआ। हरि सिँघासण अडोल, मात पताल अकाश ना कोई बणत बणाईआ। हरि सिँघासण अडोल, सच मण्डल दी साची रासा, साची सेजा आप विछाईआ। हरि सिँघासण अडोल, पुरख अबिनाशी घट घट वासी, आपे जाणे आपे आप रघुराईआ। हरि सिँघासण अडोल, ना कोई सुहा रिहा। हरि सिँघासण अडोल, ना कोई बस्त्र भूशण फूलनहार नाल लटका रिहा। हरि सिँघासण अडोल, अस्त्र शस्त्र ला ना हरि सुहा रिहा । हरि सिँघासण अडोल, प्रभ आपणा आप उठा रिहा।

हरि सिँघासण अडोल, साचे थाउँ है। हरि सिँघासण अडोल, करे सच न्याउँ है। हरि सिँघासण अडोल, पारजात ना वेखे ठंडी छाउँ है। हरि सिँघासण अडोल, जोती जोत सरूप हरि, एका एक लगाए आपणे नाउँ है।

हरि सिँघासण अडोल, सच टिकाणया। हरि सिँघासण अडोल, एका एक सच बिबाणया। हरि सिँघासण अडोल, गुर पीरां हत्थ ना आ रिहा। हरि सिँघासण अडोल, सुघड़ सिआणे जगत राणे ना वेख वखाणया। हरि सिँघसाण आप उठाए आपणे भाणे, ना देवे कोई सहारया। हरि सिँघासण आप आपणा आपे जाणे, ना कोई किसे जणा रिहा। हरि सिँघासण हरि सच निशाने, हरि साचे धाम रखा रिहा। हरि सिँघासण जोत महाने, प्रभ आपणी आप जगा रिहा। सच सिँघासण धूप दीप ना कोई वखाणे, संध्धया काल ना कोई निशानीआ। हरि सिँघासण अडोल, जोती जोत सरूप हरि, आपणा आप रखानया। हरि सिँघासण अडोल, धाम अनमोलया।

हरि सिँघासण अडोल, बिराजे हरि कन्त कन्तूलया। हरि सिँघासण अडोल, हरि साचे साजन साज, हरि झुल्ले साचा झूलया। हरि सिँघासण अडोल, वड्ड शाहो राजन राज, आप चुकाए आपणा मूलया। हरि सिँघासण अडोल, आप आपणी रक्खे लाज, आदि अन्त कदे ना भूलया। हरि सिँघासण अडोल, दूसर ना कोई मारे अवाज, दर दवारे ना कोई बोलया। हरि सिँघासण अडोल, किसे ना बंने हरि जी धागे, आप आपणा साचा तोल तोलया। हरि सिँघासण सदा अडोल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणा दर दवारा आपे खोल्लया।

हरि सिँघासण सच दवारया। हरि सिँघासण अडोल, अन्त ना पारावारया। हरि सिँघासण हरि जी मवल, पूरे तोल तुला रिहा। हरि सिँघासण अडोल, ना कोई जाणे जीव धवल, लेखा अगणत ना कोई गिणा रिहा। हरि सिँघासण ना उपजे किसे कँवल, ना नाभी

कोई टिका रिहा। हरि सिँघासण जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोती नाल समा रिहा।

हरि सिँघासण खेल अपारया। जोती नूर इक्क निरंकारया। चार कुण्ट दह दिशा वेखे वेख विचारे पावे सारया। साचा घर साचा झण्डा झुल्ले ना दूसर किसे दवारया। जोती जोत सरूप हरि, जोती लाटी लाट लिलाटा छत्तर झुल्ले सीसे, आप आपणी बणत बणा रिहा।

जोती जामा हरि जगदीशे, ना कोई भेव खुल्ला रिहा। जोती जोत सरूप हरि, सच सिँघासण हरि साचा डेरा ला रिहा। सच सिँघासण कर त्यार। प्रभ अबिनाशी करे विचार। कवण साजणा हरि जी साजे, कवण बंने माया धार। जोती जोत सरूप हरि, साची जोत कर अकार। (४-५६० ५६१) (१ माघ २०११)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★
★ ★ ★ ★ ★ ★ ★